



ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०२६

काकोरी की गाड़ी में जो क्रांति-गीत सुनाया था,
और लहू से अपने जिसने स्वातंत्र्य-दीप जलाया था।
अशाफाक उल्ला तुमको जितना नमन करें हम कम है,
अमिट शहादत हुई आपकी गर्वित हम सब जन हैं।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्व्याजानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹30

180

सफलता के 6 मूल मंत्र



महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०



महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०



मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच



For More Information Visit us on :



mdhspicesofficial



mdhspicesofficial



mdhspicesofficial



SpicesMdh

www.mdhspices.com



SCAN FOR MDH
ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आंचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ. सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ♦ भारत विदेश

संरक्षक - 11000 रु. \$ 1500

आजीवन - 2500 रु. \$ 400

पंचवर्षीय - 1200 रु. \$ 250

वार्षिक - 300 रु. \$ 60

एक प्रति - 30 रु. \$ 10

भुगतान राशि धनादेश/बैंक/ड्राफ्ट
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्

१९६०८५३१२६

आश्विन कृष्ण द्वादशी

विक्रम संवत्

२०८३

दयानन्द

२०२

October - 2026

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 4000 रु.

आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 3000 रु.

चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 2000 रु.

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

सत्यार्थ सौरभ

वर्ष-१५, अंक-०६

अक्टूबर-२०२६ ०३



स	०४	वेद सुधा
मा	१०	अद्भुत कलाम
चा	११	सत्यार्थ मित्र बनें
र	१२	अशफाकुल्ला खान जीवन और संघर्ष
	१४	आर्य समाज में पुनर्जागरण हेतु सुझाव
	२०	जीवन अमृत
ह	२३	बोलने से पहले दस बार सोचो
ल	२५	स्वास्थ्य- वाय और स्वास्थ्य
च	२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १५

अंक - ०६

डारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा. लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

मुद्रण



ओ३म्

वेद सूद्या

सहृदय तथा द्वेष रहित बनो

सहृदयं साम्मनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।

- अथर्ववेद ३/३०/१

वेदमन्त्र कह रहा है कि मैं तुम्हें सहृदय, समान हृदय वाला, समान मन वाला तथा द्वेष रहित करता हूँ। ऐसा होना परिवार, समाज सभी के लिए आवश्यक है।

सहृदय के दो अर्थ हैं- १. हृदय वाला २. अन्यो के समान हृदय वाला।

हृदय तो सबके पास है। बिना हृदय जीवन ही असम्भव है। फिर वेद क्यों कह रहा है कि मैं तुम्हें हृदय वाला बनाता हूँ। यद्यपि हृदय तो सबके पास है, किन्तु हृदय के विचार सबके अलग-अलग हैं। किसी को धन्यवाद देते समय हार्दिक धन्यवाद ही कहते हैं। यहाँ पर सहृदय का अर्थ है- कोमल, उदात्त हृदय वाला। ऐसा व्यक्ति जो दयालु हो, दूसरों के काम आता हो, दूसरों के कष्ट में पिघल जाता हो, उनकी सहायता करता हो, सहृदय कहलाता है। इसके विपरीत विचारों वाला व्यक्ति पाषाण हृदय कहलाता है। जैसे पत्थर पर जोक नहीं लगती तथा न ही वह गरमी में पिघलता है, पाषाण हृदय व्यक्ति भी ऐसा ही होता है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला जीवित नहीं रह सकता। **समाज में रहने के लिए उसे सहृदय होना ही चाहिए।** नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं जिनसे दोनों के अन्तर का पता चलेगा-

सहृदय व्यक्ति

★ महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला लीडर प्रेस से अपनी रायल्टी के एक सौ चार रुपये लेकर कवियित्री



महादेवी वर्मा के घर जा रहे थे। रक्षा बन्धन पर अपनी इस मुँह बोली बहन को यह भेंट देनी थी। मार्ग में एक वृद्धा की आवाज सुनायी दी कि बेटा इस भूखी अभागिन को कुछ दे दो। निराला जी तांगा रुकवा कर वृद्धा के पास गये तथा भीख माँगने का कारण पूछा। वृद्धा बोली, शरीर में काम करने की शक्ति नहीं रही तो पुत्रों ने घर से निकाल दिया। अतः जीवित रहने के लिए भीख माँगनी पड़ रही है। निराला जी ने रायल्टी की

पूरी राशि उसे दे दी। वृद्धा ने भी फिर भीख न माँगने का वायदा किया। किराये के पैसे भी नहीं बचे थे। निराला जी के तांगे का किराया भी महादेवी वर्मा ने ही चुकाया। एक ओर वे हृदयहीन व्यक्ति हैं जो वृद्धावस्था में अपनी माँ को भी घर से निकाल देते हैं। यह समस्या आजकल विकराल रूप में है। तभी तो असहाय वृद्धों के लिए वृद्धाश्रम बन रहे हैं। प्राचीन काल में पैसा नहीं था। दूसरी ओर सहृदय निराला जी हैं, जो पूरी रायल्टी वृद्धा को दे देते हैं। एक अन्य अवसर पर भी वे शीत ऋतु में शाल ओढकर रिक्शा से कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक निर्धन सर्दी से सिकुड़ा हुआ पड़ा था। निराला जी ने अपना कीमती शाल उस पर डाल दिया। स्वयं शीत में ही आगे बढ़ गये।

★ सहृदयता के ऐसे उदाहरण भी हैं। जिन पर विश्वास होना कठिन है। सहृदयता शत्रु-मित्र राजा-रंक का भेद नहीं जानती। वह सबके लिए समान रहती है। नीचे कुछ घटनाएँ दी जा रही हैं।

★ पुराने समय में राजा-रानी आदि वेश बदलकर प्रजा का हाल-चाल जानते थे। जम्मू कश्मीर के महाराज प्रताप सिंह एक रात्रि में नदी किनारे गये तो वहाँ एक युवक भूमि पर लेटा हुआ था। पूछने पर बतलाया कि मैं लक्ष्मी का दामाद हूँ। अपनी पत्नी को लेने जा रहा था। तीव्र ज्वर के कारण मैं चल नहीं सकता। राजा ने कहा तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगा। वह संकोच करने लगा तो राजा ने उसे अपने घोड़े पर बैठाया तथा स्वयं लगाम पकड़कर पैदल-पैदल चलने लगे। राजा ने पता कर लिया कि यह युवक राजमहल में कार्यरत लक्ष्मी का ही दामाद है। राजा उसे लेकर लक्ष्मी के घर पहुँचे तो लक्ष्मी ने राजा को पहचान लिया तथा क्षमा माँगने लगी। प्रताप सिंह बोले- मैं राजा बाद में, किन्तु मनुष्य पहले हूँ। मनुष्यता के नाते यह मेरा कर्तव्य था।

★ ऐसी ही घटना फ्रांस के सम्राट् नैपोलियन की है। रात्रि भ्रमण के समय उन्होंने देखा कि कुछ मजदूर मिलकर भारी-भारी खम्भे उठा रहे हैं। पसीने से तरबतर हैं तथा हाँफ रहे हैं। नेपोलियन ने ठेकेदार से कहा कि आप इनके कार्य में सहायता कर दो। उसने कहा- मैं इनका ठेकेदार, ये मजदूर। मैं यह कैसे कर सकता हूँ। नैपोलियन वेश बदले हुए थे। वे मजदूरों की सहायता करने लगे तो ठेकेदार ने पूछा आप कौन हैं? उत्तर मिला- मुझे नैपोलियन कहते हैं। ठेकेदार तो सन्न रह गया। क्षमा माँगी। कहाँ सम्राट कहाँ मजदूरों की सहायता।

★ एक घटना तो अति आश्चर्यकारक है। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के पति फिरोज गाँधी के १९५२ तथा १९५७ के संसदीय चुनाव में नंदकिशोर नामक व्यक्ति फिरोज गाँधी के विरुद्ध प्रत्याशी थे। १९५७ के चुनाव में नन्द किशोर के पास चुनाव लड़ने को धन नहीं था। फिरोज जी को पता चला तो उसकी जमानत राशि भी स्वयं जमा करायी। दोनों एक ही गाड़ी में चुनाव प्रचार को जाते थे। जीतने पर पता चला कि नन्द किशोर को टी.बी. है तो उसे दिल्ली बुलाकर इलाज भी कराया।

साम्मनस्यम्- सहृदयता के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि हम समान मन वाले हों। मन का कार्य संकल्प-विकल्प अर्थात् विचार करना है। परिवार को ही लें। यदि वहाँ पर सभी के विचार पृथक्-पृथक् होंगे तो वह परिवार उन्नति नहीं कर सकता, भले ही वहाँ पर सहृदय व्यक्ति ही रहते हों। सभी की सोचने तथा करने की दिशा एक ही हो, उसमें विपरीतता न हो, तभी उन्नति होगी। यही अवस्था समाज एवं पूरे राष्ट्र की है। आज सामञ्जस्य समाप्त होता जा रहा है। आज न तो परिवार में सामञ्जस्य है तथा न ही राष्ट्र में। परिवार में सबके विचार अलग-अलग, यहाँ तक कि परस्पर विरुद्ध भी हैं। यही कारण है कि पिता-पुत्र, पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे की हत्या तक भी करा देते हैं। राष्ट्र की अवस्था तो अत्यन्त शोचनीय है। कोई एकता की बात करता है तो कोई 'भारत तोड़ो' के नारे लगाते हैं। सरकार की अच्छी बातों का भी विरोध करना वे अपना अधिकार समझते हैं, तथा इसके लिए वे चीन से भी सहायता लेते हैं, भले ही इससे राष्ट्रीय हानि हो रही हो। सामञ्जस्य के बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता।

अविद्वेषम्- द्वेष रहित होना यह बहुत कठिन कार्य है। हम प्रायः निरर्थक भी परस्पर द्वेष को जन्म दे देते हैं। अपने अहंकारवश या दूसरे की उन्नति को सहन न करते हुए हम उसके प्रति अपने मन में द्वेष पाल लेते हैं। द्वेष रहितता इसलिए आवश्यक है कि इसके बिना वैचारिक सामंजस्य उत्पन्न ही नहीं हो सकता। तथ्य यह भी है कि द्वेष करने वाला व्यक्ति अपना ही अहित करता है। जिसके साथ वह द्वेष बुद्धि रखता है, उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

किसी बात पर परस्पर विवाद होने पर भी यह आवश्यक नहीं कि वहाँ द्वेष भी रहे। पंजाब की एक घटना है कि दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध न्यायालय में केस चल रहा था। वे दोनों तारीख के दिन एक ही घोड़े-तांगे

पर बैठकर न्यायालय जाते थे। उनमें परस्पर कोई द्वेष या विरोध नहीं था। ऐसा अन्यत्र भी सम्भव है। द्वेषी मनुष्य ही समाज तथा राष्ट्र को नष्ट करता है। पाण्डवों के प्रति दुर्योधन का द्वेष ही महाभारत युद्ध का कारण बना। संस्कृत की एक सूक्ति है- **द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्।**

अर्थात् दुष्ट व्यक्ति महान् पुरुषों से द्वेष करते हैं। यहाँ भी यही स्थिति थी।

द्वेष मन की अग्नि है जो अन्दर-ही-अन्दर सुलगती रहती है। अग्नि का स्वभाव है कि जहाँ सुलगती है सबसे पहले उसी स्थान को दग्ध करती है। द्वेष भी सबसे पहले द्वेष करने वाले व्यक्ति पर ही प्रहार करता है। उसकी चिन्तन शक्ति को कुण्ठित करता है। क्योंकि स्वस्थ चिन्तन शान्त मन से ही सम्भव है। द्वेषी व्यक्ति का चिन्तन सर्वदा द्वेषपूर्ण ही होगा। जिससे वह द्वेष करता है, उसे हानि कैसे पहुँचायी जाए, उसका अपकार कैसे किया जाए, इन्हीं बातों की योजना में वह अपनी ऊर्जा का व्यय करेगा। जिसके प्रति ईर्ष्या-द्वेष किए जा रहे हैं, अभी उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ है जबकि द्वेष करनेवाले का मन द्वेष की अग्नि में जलने लगा है।

अनेक व्यक्तियों का तो परस्पर लड़ाई-झगड़े या अन्य किसी कारण से द्वेष हो जाता है, किन्तु अनेक व्यक्ति बिना कारण ही अपने मन में ईर्ष्या-द्वेष पाले रहते हैं। किसी की उन्नति को देखकर, समृद्धि को देखकर उच्च पद या विद्या को देखकर, कुछ व्यक्ति मन ही मन उनसे जलते रहते हैं। द्वेष एक विश्वव्यापिनी बीमारी है। एक



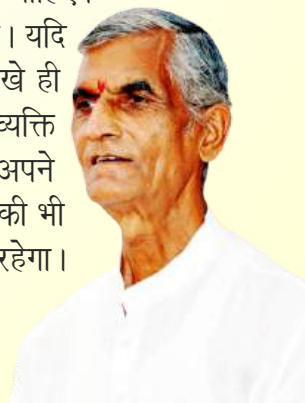
राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के प्रति, एक ही राष्ट्र में एक प्रदेश के निवासियों का दूसरे प्रदेश वाले के प्रति द्वेष रहता है। जातीय द्वेष की अनेक घटनाएँ होती ही रहती हैं। धार्मिक द्वेष सबसे प्रबल है। एक जाति वाला दूसरी जाति की उन्नति को सहन नहीं करता। धार्मिक द्वेषभाव वाले तो एक-दूसरे को समाप्त करने पर ही उतारू रहते हैं।

परिवार भी ईर्ष्या-द्वेष से अछूते नहीं हैं। भाईयों में, बहिनों में, यहाँ तक कि पति-पत्नी में भी परस्पर द्वेष पनपता रहता है। ईर्ष्या तथा द्वेष का परस्पर जोड़ा है।

पहले किसी के प्रति हमारे मन में ईर्ष्या-जलन पैदा होती है। इसके बाद हम उससे द्वेष करने लगते हैं। उसका अनिष्ट सोचने लगते हैं। इस प्रकार मन स्थायी रोगी हो जाता है। पतंजलि मुनि ने राग-द्वेष की गणना पंच क्लेशों में की है। इनमें राग तथा द्वेष ही प्रमुख हैं।

ईर्ष्या-द्वेष को मिटाने के लिए मन में अन्यो के प्रति प्रेम तथा सहानुभूति के भाव भरने चाहिए।

अपने से उन्नतिशील को देखकर प्रसन्न रहें तो इससे द्वेष नहीं पनपेगा, मन शान्त रहेगा। यदि परस्पर विचार नहीं मिलते हैं, सामंजस्य नहीं है, तो भी आवश्यक नहीं कि ईर्ष्या-द्वेष रखे ही जाएँ। प्रेमपूर्वक भी विचार विभिन्नता रखी जा सकती है। मन में प्रेम के भाव रखने से ही व्यक्ति शान्त एवं प्रसन्न रह सकता है। कुछ उच्च पदस्थ व्यक्ति तो अपना रौब जमाने के लिए ही अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं को डाँटते फटकारते रहते हैं। यदि वे प्रेम से काम लें तो इससे उनकी भी प्रतिष्ठा होगी, कार्य भी सुचारु ढंग से चलेगा तथा वातावरण भी शान्ति एवं प्रसन्नतायुक्त रहेगा। आप ईर्ष्या-द्वेष छोड़ जिसके प्रति प्रेम एवं सहृदयता दिखलाते हैं, उस पर तो प्रभाव बाद में पड़ेगा, इससे पहले आपका मन प्रसन्नता से परिपूर्ण हो चुका होगा। वह वहाँ पर जलने वाली द्वेषाग्नि को बुझा चुका होगा। आप अधिक लाभ में हैं।



लेखक एवं भाष्यकार- आचार्य रघुवीर वेदालंकार
साभार- वैदिक जीवन



और त्वचा देखने लगी (?) FBI ने भी खाया धोखा

त्वचा की आँखें: जूल्स रोमेंस के एक ऐतिहासिक भ्रम की कहानी

और जब FBI ने भी खाया धोखा

{प्रिय पाठकगण हमने के अंक में “चमत्कार को नमस्कार” एवं“कलियुग में इन्द्रियों ने बदल लिए अपने कार्य” लेख लिखे थे। अब हम कुछ ऐसे और दावेदारों के बारे में लिख रहे हैं ताकि आप जान सकें कि ऐसी चमत्कारिक शक्तियों के दावे पुरातन समय में भी और विश्व के हर कोने में होते थे। क्या यह मुमकिन है कि इंसान अपनी आँखों के बजाय अपने गालों या त्वचा अथवा अँगुलियों से देख सके? आज के शिक्षित लोगों को यह बात किसी विज्ञान-कथा (sci-fi) फिल्म जैसी लग सकती है, लेकिन १९१६ में फ्रांस के एक लेखक और शोधकर्ता जूल्स रोमेंस (जिनका असली नाम लुई हेनरी जीन फेरिगौले था) ने इसे एक वैज्ञानिक सच्चाई बताकर पूरी दुनिया में तहलका मचा दिया था। बाद में इनकी भी पोल खुल गयी। आज भी ऐसे ही पाखण्ड विभिन्न नामों से पनप रहे हैं। ध्यानाकर्षण के लिए हम यह शृंखला सत्यार्थ सौरभ में दे रहे हैं। आप लोगों द्वारा भी ये आलेख पसन्द किये जा रहे हैं इस हेतु धन्यवाद।}

कल्पना कीजिए कि आपकी आँखों पर एक मोटी पट्टी बंधी है, चारों तरफ घुप अँधेरा है, लेकिन फिर भी आप अपने सामने रखे ताश के पत्ते पहचान सकते हैं, किताब पढ़ सकते हैं या चेस खेल सकते हैं। क्या यह मुमकिन है? इस प्रकार की प्रवृत्तियों का अध्ययन करने के पश्चात्, अगस्त १९६३ में, ड्यूक यूनिवर्सिटी की पैरासाइकोलॉजी लैब ने कहा कि “हर १५-२० साल में इस प्रकार के दावे करने वालों की एक अजीब सी लहर आती है, कुछ लोग यह दावा करते हैं कि वे अपनी आँखों के बिना भी ‘देख’ सकते हैं। विज्ञान की दुनिया में इसे पारोप्टिक इल्यूजन (बिना आँखों के देखने का भ्रम) का नाम दिया गया। यह कहानी उसी भ्रम, उसे सच मानने वाली अमेरिकी सेना और उसे चुनौती देने वाले वैज्ञानिकों की है।”

एक पिता का अनोखा दावा और FBI की एन्ट्री

कहानी में असली रोमांच तब आता है जब १९५७ में विलियम फूस और उनकी छोटी सी बेटी मार्गरेट फूस पूरे अमेरिका के अखबारों की सुर्खियाँ बनने लगे। फूस का दावा कोई छोटा-मोटा नहीं था; उनका कहना था कि वे

इंसान की 'छठी इन्द्रि' (ESP) को जगाकर, अन्धे लोगों को देखना सिखा सकते हैं। उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि उनका तरीका सीखकर एक अन्धा व्यक्ति भी सुरक्षित कार चला सकेगा!

यह खबर आग की तरह फैली और सीधे अमेरिकी सेना (U.S. Army) और FBI के कानों तक जा पहुँची शुरुआत में FBI के अधिकारी खुशी से उछल पड़े। जरा सोचिए अगर यह सच होता, तो क्या-क्या नहीं किया जा सकता था।

बिना लिफाफा खोले किसी की भी सीक्रेट चिट्ठी पढ़ना।

बंद इमारतों के आर-पार देखकर जासूसी करना।

अमेरिकी सेना के कर्नल फ्रैंक एफ. कैर ने भी इस मामले में गहरी दिलचस्पी ली और सच्चाई जानने के लिए उस समय के मशहूर वैज्ञानिक जे. बी. राइन को पत्र लिखा।

विज्ञान की कसौटी: जे. बी. राइन का जवाब

जे. बी. राइन, जो ड्यूक लैब के प्रमुख थे, उन्होंने पहले ही ऐसे कई दावों (जैसे प्रो. शेपर्ड या रोजा कुलेन्शोवा) की जाँच की थी। हर बार नतीजा एक ही निकलता ये सब महज एक चाल या आँखों का धोखा था। उन्होंने दृष्टिहीन बच्चों पर काफी प्रयोग किए थे। अपनी किताब फ्रंटियर साइंस ऑफ द माइंड में राइन ने स्पष्ट किया- “दृष्टिहीन बच्चों में भी सोचने-समझने की क्षमता आम बच्चों जैसी ही होती है। लेकिन इंसानों का कोई भी ऐसा समूह नहीं है जिसके पास जन्म से ही दूसरों से ज्यादा जादुई (ESP) शक्तियाँ हों।”

FBI ने भी फूस की गहरी जाँच की। लेकिन जैसे-जैसे जाँच आगे बढ़ी, उनका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। उन्हें समझ आ गया कि फूस अपने हवा-हवाई वादे कभी पूरे नहीं कर पाएँगे।

गालों से देखने वाला फ्रांसीसी कवि

इस रहस्यमयी कहानी में सिर्फ विलियम फूस ही नहीं थे। फ्रांस के एक बहुत ही सम्मानित कवि और लेखक जूल्स रोमेंस ने भी दुनिया को हैरत में डाल रखा था।

उन्होंने 'आईलेस साइट (बिना आँखों के देखना)' नाम की किताब लिखी। रोमेंस का दावा था कि इंसानों की त्वचा में प्रकाश को महसूस करने वाले बेहद सूक्ष्म अंग होते हैं, जिन्हें उन्होंने “ओसेल्स” (Ocelles) नाम दिया। उनका कहना था कि अगर इंसान सही तरीके से ध्यान लगाए, तो वह बिना आँखों के भी अपनी त्वचा (खासकर चेहरे और गालों की हड्डियों) से चीजों को देख सकता है, रंगों को पहचान सकता है और यहाँ तक कि लिखी हुई किताबें भी पढ़ सकता है।



अपने इस जादुई दावे को सच साबित करने के लिए रोमेंस ने एक खास ट्रेनिंग का तरीका भी विकसित किया। वह अपने विषयों (subjects) को “डेल्टा कंडीशन” (Delta Condition) नाम की एक गहरी एकाग्रता या ध्यान जैसी अवस्था में ले जाते थे। उनका दावा था कि इस अवस्था में जाने के बाद इंसान की त्वचा देखने का काम करने लगती है।

रोमेंस सिर्फ दावे नहीं कर रहे थे, बल्कि वे “सबूत” भी पेश कर रहे थे। १९२२ में उन्होंने कई नामी वैज्ञानिकों (जैसे लियोन ब्रुंस्विक) के सामने अपने प्रयोग किए। १९२५ में उन्होंने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया जिसने

सबको हैरान कर दिया। उन्होंने मैडम हेन (Mme Heyn) नाम की एक जन्म से अन्धी महिला को इस तकनीक से देखना सिखाने का दावा किया, जिसका पूरा विवरण उनकी किताब 'Une education pratique' में छपा।

पेरिस के प्रसिद्ध कोचीन अस्पताल (Cochin Hospital) की एक विशेषज्ञ समिति ने भी उनके दावों की जाँच की और इस 'चमत्कार' को सही ठहरा दिया।

रोमेंस की शोहरत का सितारा १९२७ में अपने चरम पर पहुँच गया। स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में दुनिया भर के चोटी के नेत्र-विशेषज्ञों (Ophthalmologists) का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इस प्रतिष्ठित मंच पर रोमेंस के काम को न सिर्फ मान्यता दी गई, बल्कि उनके शोध के लिए उन्हें एक विशेष पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। ऐसा लगा जैसे विज्ञान ने त्वचा से देखने की थ्योरी को अपना लिया है।

शक की सुई और भ्रम का पर्दाफाश

लेकिन विज्ञान की दुनिया में कोई भी चमत्कार तब तक टिका नहीं रह सकता, जब तक वह हर तरह के सख्त परीक्षणों में पास न हो जाए, और बार-बार वही परिणाम प्राप्त न होते रहें। १९३० का दशक आते-आते रोमेंस के इस तिलिस्म में दरारें पड़ने लगीं।

वैज्ञानिकों ने उनके प्रयोगों को ध्यान से देखना शुरू किया। सबसे पहली और बड़ी आपत्ति लुई लैपिक (Louis



Lapicque) (लैपिक एक पक्के और सख्त वैज्ञानिक थे। उन्हें विज्ञान के नाम पर कोई भी फालतू दावा या जादू-टोना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं था।) को। जब जूल्स रोमेंस ने 'त्वचा से देखने' का दावा किया, तो जहाँ दूसरे वैज्ञानिक चमत्कार मानकर तालियाँ बजा रहे थे, वहीं लैपिक ने सबसे पहले उसकी तकनीकी कमियाँ पकड़ीं।) फिर अन्य आलोचकों ने भी आपत्तियाँ उठाई। उन्होंने बताया कि रोमेंस अपने प्रयोगों में आँखों पर जो पट्टी (Blindfold) बाँधते थे, वह पूरी तरह से प्रकाश-रोधी नहीं थी। असल में, उस पट्टी के नीचे से थोड़ी सी रोशनी और बाहर का नजारा आसानी से देखा जा सकता था।

जब अन्य प्रयोगशालाओं में रोमेंस के प्रयोगों को कड़े नियमों और पूरी तरह से सुरक्षित पट्टियों के साथ दोहराने की कोशिश की गई, तो नतीजे शून्य निकले।

कोई भी व्यक्ति त्वचा से एक अक्षर भी नहीं पढ़ पाया।

कहानी का अन्त

जब जे. बी. राइन ने विज्ञान के कड़े नियमों के तहत इन दोनों (फूस और रोमेंस) के दावों की निष्पक्ष जाँच करनी चाही, तो दोनों पीछे हट गए। रोमेंस ने तो ड्यूक लैब से बात करने तक से मना कर दिया। बिना सख्त नियमों के, ये दावे सिर्फ एक जादू के खेल बनकर रह गए।

समय के साथ फूस और रोमेंस के दावे हवा हो गए। विलियम की बेटी, मार्गरेट फूस उस वक्त सिर्फ एक छोटी बच्ची थीं, जो शायद मासूमियत में वही कर रही थीं जो उनके पिता ने उन्हें सिखाया था। उस बच्ची पर कभी शक नहीं किया गया, लेकिन यह जानना जरूर दिलचस्प होगा कि उस समय उसके मन में क्या चल रहा था।

और इसी के साथ, बिना आँखों के देखने के दावों की यह बड़ी लहर भी इतिहास के पन्नों में गुम हो गई।

निवेदन हमारा – निर्णय आपका



– अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष – ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

अब्दुल कलाम



अब्दुल कलाम ऐसे व्यक्ति थे, जिनके जीवन का हर एक पन्ना संघर्ष, सफलता और अटूट प्रेरणा की एक अनुठी मिसाल है। उनका पूरा नाम अवुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम था। **उनका जन्म १५ अक्टूबर १९३१** को तमिलनाडु के रामेश्वरम् में एक बेहद साधारण परिवार में हुआ था।

उनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन और माता का नाम आशियम्मा था। उनके पिता पेशे से नाविक थे और घर की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी।

दक्षिण भारत के उस छोटे से शहर में समन्दर की लहरों के बीच पले-बढ़े उस लड़के के पास धन-दौलत तो नहीं थी, लेकिन उसकी आँखों में आसमान को छूने के बड़े-बड़े सपने जरूर थे। घर की तंगी के कारण बचपन में वह सुबह-सुबह उठकर रामेश्वरम् की गलियों में अखबार बेचने जाता था। साइकिल पर अखबार बाँटते हुए वह नन्हा लड़का तब यह

नहीं जानता था कि एक दिन भारत के इतिहास के पन्नों पर उसका नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

अपनी मेहनत और लगन के दम पर कलाम साहब ने अपनी पढ़ाई पूरी की और देश के सबसे महान् वैज्ञानिकों में शामिल हुए। उन्होंने भारत के अन्तरिक्ष कार्यक्रमों को नई ऊँचाइयाँ दीं और 'अग्नि' व 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें बनाकर देश को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया। यही वजह है कि उन्हें **आज पूरी दुनिया 'मिसाइल मैन' के नाम से भी जानती है।** लेकिन विज्ञान के इस शिखर पर पहुँचने के बावजूद उनके भीतर का इन्सान हमेशा जमीन से जुड़ा रहा। उनके जीवन में संवेदनशीलता और करुणा कूट-कूट कर भरी थी। एक बार जब वे एक रक्षा प्रयोगशाला के प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे, तो सुरक्षा बढ़ाने के लिए अधिकारियों ने दीवार पर टूटे हुए काँच के टुकड़े लगाने का सुझाव दिया। कलाम साहब ने इसे तुरन्त खारिज कर दिया और कहा, "अगर हम दीवार पर काँच लगा देंगे, तो उस पर बैठने वाले बेजुबान पक्षियों को चोट लग जाएगी।" सोचिए, देश की रक्षा जैसे गम्भीर काम में लगे होने के बावजूद उनके मन में मूक जीवों के प्रति कितना अगाध प्रेम था।

उनकी इसी सादगी, ईमानदारी और राष्ट्र-समर्पण को देखते हुए देश ने उन्हें भारत के सर्वोच्च पद यानी ११वें राष्ट्रपति के रूप में चुना। जरा कल्पना कीजिए, एक नाविक का बेटा, जो कभी गलियों में अखबार बेचता था, वह देश के सबसे बड़े राष्ट्रपति भवन में पहुँचा। लेकिन राष्ट्रपति बनने के बाद भी उनका अहंकार नहीं बढ़ा। जब वे केरल गए, तो उन्होंने किसी वीवीआईपी या अमीर उद्योगपति को नहीं, बल्कि एक साधारण मोची और एक छोटे से ढाबे वाले को अपना विशेष मेहमान बनाया। ये वो लोग थे जिन्होंने उनके संघर्ष के दिनों में उनकी मदद की थी। कलाम साहब ने साबित कर दिया कि सफलता की कितनी भी ऊँची सीढ़ी पर पहुँच जाओ, अपनी जड़ें और बुरे वक्त के साथियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद भी वे एक पल के लिए नहीं रुके। उनका सबसे बड़ा शौक युवाओं से मिलना और उन्हें प्रेरित करना था। एक बार एक स्कूल में व्याख्यान के दौरान अचानक बिजली चली गई और माइक बन्द हो गया। बच्चे और आयोजक परेशान हो गए, लेकिन कलाम साहब ने हार

नहीं मानी। वे मंच से नीचे उतरे, बच्चों के बीच पहुँचे और अपनी टॉच जलवाकर बिना माइक के ही पूरी ऊर्जा के साथ बच्चों से संवाद किया।

वे हमेशा कहते थे कि दुनिया उन्हें किसी बड़े ओहदे से नहीं, बल्कि सिर्फ एक 'शिक्षक' के रूप में याद रखे। और उन्होंने अपनी यह बात सच कर दिखाई। २७ जुलाई २०१५ को जब वे शिलान्ग के आईआईएम (IIM) में युवाओं को लेक्चर दे रहे थे, तो छात्रों को पढ़ाते-पढ़ाते ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वे हमेशा के लिए इस दुनिया से विदा हो गए। उनकी अन्तिम सांस भी देश के युवाओं को पढ़ाते हुए ही निकली।

डॉ. कलाम साहब का पूरा जीवन हमें यह सिखाता है कि हमारी पृष्ठभूमि या शुरुआती मुश्किलें इस बात को तय नहीं करती कि हम भविष्य में क्या बनेंगे। अगर आपके इरादे पक्के हैं, आपके सपने बड़े हैं और आप देश व समाज के प्रति ईमानदार हैं, तो आप भी अपनी तकदीर खुद लिख सकते हैं। उनके द्वारा कही गई यह बात हमेशा याद रखना- "सपने वो नहीं जो हम सोते हुए देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते।"

१९८० में, डॉ. कलाम के नेतृत्व में भारत ने अपना पहला स्वदेशी सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SLV-3) सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में भेजा और रोहिणी उपग्रह को उसकी कक्षा में स्थापित किया।

उनके नेतृत्व और दूरदर्शिता के कारण भारत को 'अग्नि'

(बैलिस्टिक मिसाइल) और 'पृथ्वी' (सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल) जैसी आधुनिक मिसाइलें मिलीं। इसी असाधारण योगदान के कारण उन्हें आज भी गर्व से 'मिसाइल मैन' कहा जाता है।

मई १९९८ में पोखरण में किए गए सफल परमाणु परीक्षणों (Pokhran-II) में डॉ. कलाम ने वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में मुख्य भूमिका निभाई थी।

२००२ से २००७ तक भारत के ११वें राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल देश के इतिहास में सबसे अनूठे और लोकप्रिय राष्ट्रपतियों में गिना जाता है।

उन्होंने अपनी पुस्तक 'इण्डिया २०२०: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम' के जरिए भारत को विकासशील से एक विकसित राष्ट्र बनाने का एक स्पष्ट रोडमैप दिया।



सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों की गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य की अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आलीशान बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार विधिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार विधिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मेँ व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 रु. रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक-अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE-UBIN 0531014, MICR CODE-313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।



अशफाकुल्ला खान

जीवन और संघर्ष

अशफाकुल्ला खान का जन्म २२ अक्टूबर १९०० को शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) में एक पठान मुस्लिम परिवार में हुआ था। वे अपने माता-पिता शफीकुल्ला खान और मज़हरुन्निसा की छह संतानों में सबसे छोटे थे।

पठान होने के नाते वे बचपन से ही निडर और साहसी स्वभाव के थे, पर उनके भीतर एक शायर का कोमल हृदय भी धड़कता था। वे अपनी रचनाओं में 'हसरत' उपनाम लिखा करते थे। इनके खानदान के सभी लोगों की शूमार वहाँ के रईसों में होती थी। अशफाकुल्ला तैरने, घोड़े पर सवारी करने, क्रिकेट, हॉकी खेलने तथा बंदूक चलाने में घर में ही प्रवीणता प्राप्त कर चुके थे। वे बड़े सुडौल और सुन्दर युवक थे।

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल से मित्रता और क्रान्ति पथ में प्रवेश

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल से इनकी लड़कपन से ही दोस्ती थी। जब रामप्रसाद फरारी से प्रकट हुए, उस समय से अशफाकुल्ला क्रान्तिकारी काम में शामिल होने की इच्छा प्रकट करते रहे। आरम्भ में तो पण्डित जी ने इनकी बातों को टाल दिया, किन्तु जब उनका आग्रह बहुत देखा, तो उन्हें भी क्रान्तिकारी आन्दोलन

में शामिल कर लिया।

काकोरी काण्ड (९ अगस्त १९२५)

८ अगस्त १९२५ को रामप्रसाद बिस्मिल के घर एक इमरजेंसी बैठक हुई, जिसमें अगले ही दिन ब्रिटिश सरकार का खज़ाना लूटने की योजना तय की गई। क्रान्तिकारी दल को हथियार खरीदने के लिए तुरन्त धन की सख्त ज़रूरत थी। अतः काकोरी की भूमिका बनी।

६ अगस्त १९२५ को शाहजहांपुर से चली ८-डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को काकोरी रेलवे स्टेशन के पास बिस्मिल के नेतृत्व में कुल १० क्रान्तिकारियों ने चेन खींचकर रोक लिया। गार्ड के डिब्बे से सरकारी खज़ाने से भरा लोहे का बक्सा (तिजोरी) नीचे गिरा दिया गया।

क्रान्तिकारियों ने तिजोरी खोलने का प्रयास किया, लेकिन तिजोरी नहीं खुली।

जब तिजोरी किसी भी तरह नहीं खुली, तो अशफाकुल्ला खान ने अपना माउज़र (जर्मन मौज़र पिस्तौल) मन्मथनाथ गुप्त को थमा दिया और वे स्वयं हथौड़ा (घन) उठाकर पूरी शक्ति से तिजोरी तोड़ने में जुट गए। आखिरकार ताला टूट गया और क्रान्तिकारियों ने चाँदी के सिक्कों व नोटों से भरे थैलों को जल्दी-जल्दी

चादरों में बाँधकर वहाँ से भागना शुरू किया। जल्दबाजी में एक चादर मौके पर ही छूट गई, जो बाद में पुलिस जाँच में एक महत्वपूर्ण सबूत बनी।

यहीं पर घटना एक दुखद मोड़ लेती है। मन्मथनाथ गुप्त ने उत्सुकतावश माउज़र का ट्रिगर दबा दिया, जिससे अनजाने में चली गोली एक सहयात्री अहमद अली नामक व्यक्ति को जा लगी, और उनकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। यह पूरे ऑपरेशन की एकमात्र अनपेक्षित जनहानि थी। क्रान्तिकारियों का इरादा किसी निर्दोष यात्री को नुकसान पहुँचाना कभी नहीं था; यह विशुद्ध रूप से एक अनियंत्रित दुर्घटना थी, जो बाद में मुकदमे में भी एक अहम मुद्दा बनी।

इस काण्ड के बाद पुलिस ने बिस्मिल को तो पकड़ लिया, पर अशफ़ाक़ अकेले ऐसे क्रान्तिकारी थे जिनका पुलिस लम्बे समय तक पता नहीं लगा पाई।

विदेश जाने की योजना

अशफ़ाक़ ने इसके बाद इंजीनियरिंग की आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाने की योजना बनाई, ताकि वहाँ से अर्जित ज्ञान और साधनों से स्वतंत्रता संग्राम को और मज़बूती दी जा सके। यह दिखाता है कि उनकी सोच केवल तात्कालिक बचाव तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे दीर्घकालिक रणनीति के तहत खुद को और सक्षम बनाकर क्रान्ति में लौटना चाहते थे। विदेश जाने की व्यवस्था के लिए वे दिल्ली पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने एक पठान मित्र की मदद ली, जो पहले उनका सहपाठी रह चुका था। लेकिन इस दोस्त ने धोखा देते हुए उनका ठिकाना पुलिस को बता दिया। कुछ स्रोतों के अनुसार यह ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित इनाम के लालच में किया गया विश्वासघात था।

अंग्रेजों की साम्प्रदायिक चाल

इतिहासकार सर्वदानन्दन के हवाले से एक अन्य महत्वपूर्ण प्रसंग सामने आता है। गिरफ्तारी के बाद अंग्रेजों ने अशफ़ाक़ को सरकारी गवाह (approver) बनाने की कोशिश की और उन्हें यह कहकर बहलाने

का प्रयास किया कि अगर हिन्दुस्तान आज़ाद भी हो गया तो उस पर हिन्दुओं का राज होगा और मुसलमानों को कुछ हासिल नहीं होगा। यानी अंग्रेजों ने उनकी धार्मिक पहचान का सहारा लेकर उन्हें बिस्मिल व अन्य साथियों के खिलाफ़ भड़काने और तोड़ने की कोशिश की। पर अशफ़ाक़ इस साम्प्रदायिक चाल में नहीं फंसे और अपने साथियों के प्रति वफ़ादार बने रहे। यह प्रसंग उनकी और बिस्मिल की दोस्ती को और भी गहरा अर्थ दे देता है।

फाँसी और अन्तिम सन्देश

अशफ़ाक़ुल्ला को फैज़ाबाद जिले में १६ दिसम्बर १९२७ को फाँसी हुई। वे बहुत खुशी के साथ, कुरान शरीफ़ का बस्ता कंधे से टांगे हाजियों की भाँति 'लब्बैक' कहते और कलाम पढ़ते फाँसी के तख्ते के पास गए। तख्ते को उन्होंने बोसा (चुम्बन) दिया और उपस्थित जनता से कहा- “मेरे हाथ इंसानी खून से कभी नहीं रंगे, मेरे ऊपर जो इल्ज़ाम लगाया गया, वह गलत है, खुदा के यहाँ मेरा इन्साफ़ होगा।” इसके बाद उनके गले में फंदा पड़ा और खुदा का नाम लेते हुए वे इस दुनिया से कूच कर गए।

अन्तिम दर्शन

उनके रिश्तेदार उनकी लाश शाहजहाँपुर ले जाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने बहुत आरजू-मिन्नत की, तब कहीं इजाज़त मिली। शाहजहाँपुर ले जाते समय जब इनकी लाश लखनऊ स्टेशन पर उतारी गई, तब कुछ लोगों को देखने का मौका मिला। चेहरे पर १० घण्टे के बाद भी बड़ी शान्ति और मधुरता थी। बस केवल आँखों के नीचे कुछ पीलापन था। बाकी चेहरा तो ऐसा सजीव था कि मालूम होता था कि अभी-अभी नींद आई है। यह नींद अनन्त थी।

कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह।

रख दे कोई जरा सी,

खाके वतन कफ़न में।।



प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग





गतांक से आगे.....

सर्वप्रथम जो निष्ठावान् आर्य या आर्य परिवार हैं, उन्हें चाहिए कि **आर्यसमाज के दोहरे चरित्र वाले सदस्यों को आर्य न मान कर** अपने सम्बन्ध आर्य परिवारों के साथ रखें और अपने प्रत्येक काम-काज में उन्हें ही बुलाएँ और स्वयं भी उनके यहाँ सपरिवार आना-जाना प्रारम्भ करें। जहाँ तक हो सके अपने बच्चों के सभी संस्कार वैदिक रीति से कराएँ और विवाहादि में आर्य परिवारों से ही रिश्ता जोड़ें।

अगले दस वर्ष में न्यूनतम ५०० परिवारों को जोड़ दिया जाय जो जाति-पाँति तोड़ कर सम्बन्ध (रोटी-बेटी) करने को समुद्यत हों। इस दिशा में जीतोड़ परिश्रम किया जाय और व्याख्यानादि द्वारा तीव्र प्रेरणा प्रदान की जाये। ऐसे परिवारों का संगठन ही वास्तविक आर्यसमाज होगा और यहीं पर संस्कारविधि और वैदिक कर्मकाण्ड को प्रतिष्ठा मिलेगी।

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त का कर्मकाण्ड सभी आर्यों का निर्धारित निश्चित और एक हो। प्रारम्भ और अन्त बिल्कुल एक जैसा हो। एकरूपता ही समाज की पहचान है। विवादास्पद विषयों के निर्णय हेतु और व्यवस्था देने हेतु विद्वानों की एक सभा गठित हो जो विचार-विमर्श और शास्त्रार्थ आदि के माध्यम से कर्मकाण्डीय गुण दोषों का विवेचन करती रहे। उनकी व्यवस्था के बिना कोई विद्वान् मनमाना कर्मकाण्ड प्रचलित न करें और नहीं कोई आर्य उसे माने।

पौरोहित्य का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाय और

प्रत्येक आर्य परिवार को आर्य पुरोहित उपलब्ध कराया जाय तथा प्रत्येक पुरोहित को न्यूनतम द्वितीय श्रेणी के सरकारी वेतनमान के बराबर दक्षिणा दी जाय।

पुरोहिती का कार्य निर्लोभी, त्यागी और विद्वान् व्यक्तियों को ही सौंपा जाय। पुरोहित की योग्यता इतनी हो कि यजमान उससे परामर्श कर अपनी समस्याओं का निराकरण कर सके और परिवार के सदस्यों पर उसका वर्चस्व स्थापित हो।

सभी गुरुकुलों और शिक्षा संस्थानों की एक पाठविधि



हो जिसमें महर्षि दयानन्द की उपलब्ध सम्पूर्ण पाठ विधि लागू हो। इसके साथ-साथ सभी विषयों का माध्यम संस्कृत या हिन्दी भाषा हो। सभी गुरुकुल व अन्य आर्य शिक्षा संस्थान एक ही विश्वविद्यालय से जुड़े हों। शिक्षा स्तर इतना उच्च व प्रभावपूर्ण हो कि संसार की कोई शिक्षा संस्था उसकी समता न कर सके।

आर्यों का अपना एक बहुत बड़ा चिकित्सालय हो जहाँ सभी नवीनतम आधुनिक उपकरण व योग्य

चिकित्सक रहें। यहाँ प्रत्येक आर्य परिवार को न्यूनतम धनराशि पर उत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो।

इसके साथ ही आर्यों का एक आयुर्वेद महाविद्यालय व अनुसन्धान केन्द्र तथा औषध निर्माण शाला हो। यहाँ पर ऐसी उत्तम व प्रामाणिक औषधियों का निर्माण हो कि संसार भर के लोग उनके लिए लालायित रहें।

अपनी गौशालाएँ हों जहाँ से शुद्ध दूध और घृत



पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जिसकी शुद्धता की ख्याति सर्वत्र हो।

आर्यों का अपना अनुसन्धान केन्द्र व प्रयोगशाला हो, अपना विशाल पुस्तकालय हो जहाँ पर विविध विषयों के विद्वान् अनुसन्धान, लेखन व परीक्षण आदि कार्य करें और उन्हें अर्थ चिन्ता से मुक्त रख कर कार्य में नियुक्त रखा जाए।

तथाकथित हिन्दूवाद तथा मुस्लिमवाद अर्थात् हिन्दू और मुस्लिम आदि साम्प्रदायिक तुष्टिकरण से अलग हटकर देशभर के सभी आर्य किसी एक ऐसी राजनीतिक पार्टी को ही समर्थन दें, जो आर्यसमाज को लाभ प्रदान करने के लिए वचनबद्ध हो। जो हमें दृढ़ता प्रदान करे उसे ही हम भी दृढ़ता प्रदान करें। यह बात प्रान्तीय स्तर की छोटी पार्टियों पर भी लागू हो, जो सशक्त हों और सत्ता प्राप्ति में समर्थ हों।

आर्य लोग अपना नेता योग्यता और कार्यकुशलता के आधार पर चुनें, जिसे सब लोग आदर योग्य और अपने से अधिक बुद्धिमान, सक्षम और ऋषि भक्त समझते हों, जो ऊँचे चरित्र का हो।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर आर्यसमाज का

परिचय अत्यन्त प्रभावी ढंग से कराने की व्यवस्था हो। निःशुल्क वितरण हेतु प्रभावी साहित्य तैयार हो और महर्षि दयानन्द को भी नई पीढ़ी से प्रभावपूर्ण ढंग से परिचित कराया जाय। सारे देश और विदेशों में भी कोई ऐसा न हो जो स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज से भली-भाँति परिचित न हो, उनके प्रति श्रद्धा न रखता हो।

आर्यवीर दल के शिविरों का अधिकाधिक आयोजन हो और उनका एक निर्धारित पाठ्यक्रम हो, जो सरलता पूर्वक आर्यसमाज, वैदिक धर्म और स्वामी दयानन्द से परिचय कराता हो और उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता हो।

इन शिविरों में ऐसे नवयुवक तैयार किए जावें जो स्कूलों, कॉलेजों, हॉस्टलों आदि में जा कर नई पीढ़ी को अपनी ओर आकर्षित कर अपने साथ जोड़ सकें। आर्यवीर दल का संचालन एक केन्द्र से हो परन्तु उस केन्द्र का गठन योग्य और निष्ठावान् आर्य सज्जनों को जोड़ कर किया गया हो, अवसरवादी राजनीतिबाजों आदि से नहीं, जो पूरी तरह अकर्मण्य और मठाधीश हैं। सेवा का काम कुछ नहीं करते केवल संगठन की दुहाई देकर अपनी नेतागिरी चलाना चाहते हैं। **ऐसे नकली आर्यों से भी अब किनारा काटकर संगठन को मजबूत बनाना होगा।**

शतांश राशि देने का नियम पुनः लागू किया जाए, उसका एक कोष स्थापित किया जाए उससे आर्य समाज के प्रतिभावान छात्रों को आर्थिक सहायता दी जावे और निर्धन आर्यों को व्यापार के लिए बिना ब्याज के धन दिया जावे तथा अन्य आवश्यक अनिवार्य परोपकार के कार्यों में व्यय किया जावे।

देशभर के आर्यों का एक जनगणना रजिस्टर हो, जिसमें पुरुषों, स्त्रियों, बालक-बालिकाओं व वृद्धों की संख्या लिखी जावे और जन्म-मृत्यु का विवरण रखा जावे।

समिधाओं और सामग्री द्रव्य के लिए वृक्षारोपण और औषधि उत्पादन हेतु भूमि खरीदकर उस पर

योजनाबद्ध कार्य हो। सभी आर्य परिवारों को धृत, समिधा व अन्य हवन द्रव्य एक स्थान से ही उपलब्ध कराया जावे।

देश के सभी आर्यपरिवारों में होने वाले संस्कारों का ब्योरा रखा जाने और उन्हें सम्पन्न करवाने के लिए पुरोहित आर्यसमाज से भेजा जाये। इसके लिए पुरोहितों को प्रशिक्षित किया जावे ताकि सभी पुरोहित एक ही ढंग से संस्कार कराएँ।

प्रचार कार्य या उत्सव आदि बहुत व्ययसाध्य हो चुके हैं, धर्म प्रचार व्यापार और मुनाफे का साधन बनाना बन्द हो। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार की व्यवस्था की जावे प्रचारक भी ग्रामीण स्तर के उपलब्ध कराया जावे जो आर्यसमाज का ठीक परिचय करा सकें।

संन्यासी, उपदेशकों, भजनोपदेशकों को परिचय-पत्र प्रदान किए जावें जिससे विदित होता हो कि ये आर्य समाज के प्रामाणिक प्रचारक हैं। स्वतंत्र वैदिक विद्वानों का लाभ भी आर्य समाज की अनुमति से लिया जावे।

वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द पर आक्षेप करने वालों का उत्तर देने वाला एक विभाग स्थाई रूप से बनाया जावे। खण्डन-मण्डन साहित्य का प्रकाशन भी इस विभाग की अनुमति और प्रमाणीकरण के आधार पर किया जाये।

इस प्रकार आर्य लोग अपने आपसी विश्वास के

आधार पर स्वयं संगठित होकर कार्य करें। प्रतिनिधि सभाओं के झगड़ों में न फंसें इनसे दूर रहने में ही कल्याण है। इन प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम से अब कुछ भी नहीं किया जा सकता। संस्थावाद से हटकर खुले आकाश में वास्तविक आर्यसमाज बनाना होगा, जिसकी हर इकाई परस्पर पूरक व हितचिन्तक होगी, जहाँ एक कर्मकाण्ड होगा, जहाँ रोटी-बेटी के सम्बन्ध समान विचारों पर होंगे, हमारी एक आवाज होगी, एक अस्मिता होगी, समाहित होंगे, हानि-लाभ, सुख-दुःख और जीवन-मरण में हम सब साथ होंगे, वेद ही हमारा धर्म ग्रन्थ होगा, महर्षि दयानन्द ही हमारा गुरु होगा, संस्कारविधि ही हमारा कर्मकाण्डीय ग्रन्थ होगा, गुण-कर्म पर आधारित वर्णाश्रम-व्यवस्था वाला हमारा एक समाज होगा और वैदिक धर्म ही सबका एक धर्म होगा।

सा मा सत्योक्ति परिपातु विश्वतः॥

(विचार करें-वर्तमान में हमारी क्या स्थिति है?)

(विचार करें कहीं हम आर्यसमाज को “मठ-मन्दिर” की शक्ल देकर उसे हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय तो नहीं बना रहे हैं?)



– आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
सीताबाड़ी रोड़, केलवाड़ा
जिला- बांरा (कोटा)

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।



FCRA AMENDMENT BILL 2026

**Asset Control, NGO Regulation,
and the Debate on
EXECUTIVE OVERREACH**

असेट नियंत्रण
NGO और संस्थाओं की संपत्तियों की निगरानी और उपयोग पर सख्त प्रावधान।

NGO विनियमन
पारदर्शिता, जवाबदेही और खानकों के पालन के लिए कड़े नियम।

विदेशी अंशदान पर नियंत्रण
विदेशी योगदान की स्वीकृति, उपयोग और रिपोर्टिंग के लिए कड़े प्रावधान।

कार्यपालिका की अति शक्ति?
क्या नामित प्राधिकारी को अत्यधिक अधिकार लोकतांत्रिक संतुलन को प्रभावित करेंगे?

FCRA

धन का “दान” चाहिए, “दानव” नहीं

पारदर्शिता और सुरक्षा के बीच संतुलन कैसे?

राष्ट्रहित सर्वोपरि
पारदर्शिता से विक्रम, विक्रम से विकास

जवाबदेही से भरोसा
हर योगदान का सही उपयोग, समान का कानूनीकरण

नियम स्पष्ट, प्रक्रिया सरल
ईमानदार संस्थाओं को सहयोग, धोखा के सख्त फाटन

लोकतंत्र की मजबूती
अधिकारों का संतुलन, संस्थाओं की स्वतंत्रता सुनिश्चित

भारत में विदेशी धन के प्रवेश और उसके उपयोग को लेकर बहस कोई नई नहीं है। एक लम्बे समय से, विदेशी सहायता से चलने वाले अनेक संगठन देश में शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा राहत, सामाजिक सेवा, धार्मिक गतिविधियों और शोध जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य करते रहे हैं। ऐसे सभी वैध और पारदर्शी कार्यों का स्वागत होना चाहिए। लेकिन प्रश्न तब उठता है जब विदेशी धन का प्रयोग घोषित उद्देश्यों से हटकर राजनीतिक प्रभाव, सामाजिक अस्थिरता, धर्मांतरण व अवैध गतिविधियों अथवा भारत के राष्ट्रीय हितों के प्रतिकूल कार्यों के लिए होने लगे।

इसी मूल चिन्ता को ध्यान में रखते हुए ही विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम यानि फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट (FCRA) बनाया गया। इसे पहली बार आपातकाल (Emergency) के दौरान वर्ष १९७६ में बनाया गया था जिसका मूल उद्देश्य उस समय विदेशी फंडिंग और राजनीतिक गतिविधियों पर नजर रखना था। बाद में साल २०१० में पुराने कानून को बदलकर एक नया और अधिक सख्त FCRA २०१० अधिनियमित किया गया, जो १ मई २०११ से प्रभावी हुआ। इस विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम का उद्देश्य विदेशी धन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना था कि भारत में आने वाला विदेशी धन पारदर्शी तरीके से प्राप्त हो और उसी उद्देश्य के लिए खर्च हो जिसके लिए उसे

अनुमति दी गई है।

FCRA संशोधन को समझने की आवश्यकता

प्रस्तावित कानून को संसद के इसी सत्र में सदन में पेश किए जाने की चर्चा आजकल जोरों पर है। विधेयक का एक महत्वपूर्ण प्रावधान उन संस्थाओं की विदेशी धन से बनी संपत्तियों और विदेशी योगदान के सम्बन्ध में व्यवस्था तैयार करना है जिनका FCRA प्रमाणपत्र रद्द हो जाता है या संस्था स्वयं उसे वापस कर देती है अथवा उसका नवीनीकरण नहीं होता। इसके लिए एक Designated Authority (निर्दिष्ट प्राधिकारी) की व्यवस्था प्रस्तावित है जो ऐसी स्थिति में संपत्तियों के अस्थायी नियंत्रण, उनके प्रबंधन और आगे की व्यवस्था देखेगी। यदि संस्था निर्धारित प्रक्रिया के तहत अपना FCRA पंजीकरण बहाल करा लेती है तो संपत्तियों और अप्रयुक्त विदेशी धन की वापसी का प्रावधान भी है। विधेयक का प्रावधान यह भी कहता है कि यदि इन संपत्तियों में कोई धर्मस्थल आता है तो वहाँ के धार्मिक कार्यकलापों को यथावत् जारी रखा जाएगा।

विधेयक में एक और महत्वपूर्ण बदलाव दण्ड व्यवस्था से जुड़ा है। मौजूदा अधिकतम पाँच वर्ष की सजा को घटाकर इसे एक वर्ष करने का प्रस्ताव है। साथ ही निर्दिष्ट प्राधिकारी के आदेश के विरुद्ध पुनरीक्षण और न्यायिक अपील का रास्ता भी प्रस्तावित किया गया है। अर्थात् इसे केवल “विदेशी संस्थाओं पर कार्रवाई” के रूप में देखना

अधूरा होगा। असल मुद्दा विदेशी धन के साथ जवाबदेही, पारदर्शिता और राष्ट्रीय हित का है।

विदेशी धन पर निगरानी क्यों जरूरी है ?

किसी भी सम्प्रभु राष्ट्र के लिए यह सामान्य बात है कि वह अपने देश में आने वाले विदेशी धन के स्रोत और उपयोग पर निगरानी रखे। भारत अकेला देश नहीं है जो ऐसा करता है। अमेरिका सहित अनेक देशों में विदेशी धन, विदेशी एजेंटों, विदेशी संस्थाओं और राजनीतिक प्रभाव से सम्बन्धित अलग-अलग कानून और व्यवस्थाएँ हैं। इसलिए भारत द्वारा अपने यहाँ विदेशी योगदान के लिए नियमन तय करना किसी धर्म या समुदाय के विरुद्ध कार्रवाई मानना तथ्यात्मक रूप से उचित नहीं है।

पहले भी अनेक संशोधन हुए हैं:

इस कानून में संशोधन भी कोई पहली बार नहीं हो रहा। इससे पूर्व वर्ष १९८४, २०१०, २०१६, २०१८, २०२० व २०२२ में भी इस कानून में विभिन्न पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा संशोधन किए गए। बल्कि वर्ष २०१० में तो इस कानून को पूरी तरह से निरस्त कर एक नया और कठोर कानून बनाया गया था।

आंकड़े बताते हैं कि समस्या काल्पनिक नहीं है। गृह मंत्रालय के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार २०१६ से २०२० के बीच ही ६,६०० से अधिक गैर सरकारी संस्थाओं के FCRA पंजीकरण रद्द किए गए थे। एक अन्य आँकड़े के अनुसार विदेशी पैसों से चलने वाले कुल ५२,१५६ एनजीओ व संस्थानों में से अभी सिर्फ १४,४३५ ही सक्रिय हैं। २२,४६६ के पंजीयन रद्द किए जा चुके हैं तथा १५,२२५ पूरी तरह से निष्क्रिय हैं। नियमानुसार, पंजीकरण रद्द होने के बाद ऐसी संस्थाएं FCRA के अन्तर्गत विदेशी योगदान प्राप्त या उपयोग नहीं कर सकतीं। इसलिए इन सभी संस्थाओं को अपने पंजीयन को नवीनीकृत कराना ही चाहिए।

कार्रवाई के उदाहरण:

ग्रीन पीस इण्डिया पर २०१५ में FCRA नियमों के उल्लंघन के कई आरोप लगे थे। इनमें विदेशी योगदान के निर्धारित बैंक खाते से बाहर लेन-देन, योगदान की गलत/कम रिपोर्टिंग, प्रशासनिक खर्च की सीमा से अधिक व्यय, विदेशी NGO से भारतीय NGOs/activists के कानूनी खर्च को सहायता और अन्य अनुपालन सम्बन्धी मुद्दे शामिल थे। गृह मंत्रालय ने जाँच के बाद उसका



पंजीकरण निलम्बित किया और आगे कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू की। इसी प्रकार २०२५ में लद्दाख स्थित स्टूडेन्ट्स एजुकेशन एंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL), का FCRA लाइसेंस भी गृह मंत्रालय द्वारा रद्द किया गया था। देशभर में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। लेकिन यह भी समझना चाहिए कि हर विदेशी फण्ड लेने वाली संस्था संदिग्ध नहीं है। भारत में अनेक संस्थाएँ विदेशी सहायता के माध्यम से अस्पताल, विद्यालय, अनाथालय, आपदा राहत, ग्रामीण विकास, शोध, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और अन्य सामाजिक कार्य करती हैं। **FCRA का उद्देश्य ऐसी वैध गतिविधियों को समाप्त करना नहीं अपितु उसे संरक्षण देना है।** सरकार की मंशा है कि वैध विदेशी सहायता का तो स्वागत होगा लेकिन विदेशी धन के दुरुपयोग को किसी भी तरह बर्दास्त नहीं किया जाएगा। जो संस्था नियमों का पालन करती है तथा पारदर्शी तरीके से हिसाब देती है, उसे या उसके प्रति किसी अन्य को सन्देह का कोई कारण नहीं। आखिर धन की आवश्यकता तो सभी व्यक्तियों समाज और सरकारों को है।

ईसाई संस्थाओं द्वारा इतना भ्रम और विरोध क्यों ?

इस अधिनियम में हो रहे संशोधन को लेकर सबसे अधिक राजनीतिक विवाद इस बात पर पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है कि इसका निशाना चर्च या ईसाई संस्थाएं हैं। वास्तव में FCRA का ढांचा ना तो किसी एक धर्म विशेष के लिए बनाया गया और ना ही किसी धर्म का उसमें जिक्र है। हाँ, धार्मिक गतिविधियों से जुड़े संगठन भी तभी विदेशी योगदान प्राप्त कर सकते हैं, जब वे कानून की निर्धारित शर्तों का पालन करें। हालांकि, पीछे अनेक मामलों में चर्च व उससे जुड़ी अनेक संस्थाओं द्वारा विदेशी धन का दुरुपयोग करते हुए किस प्रकार भारत की धर्म-प्राण जनता

का अवैध रूप से धर्मांतरण किया जा रहा था, यह विषय भी किसी से छुपा नहीं है। कानून को धता बताते हुए देश



के अनुसूचित क्षेत्रों में बने अनेक अवैध चर्च, मस्जिदें, मदरसे तथा अन्य मजहबी संस्थान तथा उनकी कारगुजारियाँ भी सर्व विदित हैं। शायद इसीलिए उन्हीं के मन में डर है जिनको पकड़े जाने का भय है!

हमारे यहाँ यदि कोई संस्था ईमानदारी से धार्मिक, शैक्षणिक या सामाजिक सेवा कर रही है और विदेशी धन का वैधानिक उपयोग कर रही है, तो उसे केवल विदेशी सहायता प्राप्त करने के कारण सन्देह की दृष्टि से नहीं देखा जाता अपितु उसका सार्वजनिक सम्मान किया जाता है। किन्तु यह भी स्पष्ट रहे कि किसी की धार्मिक पहचान उस संस्था को भारतीय कानूनों से ऊपर भी नहीं रख सकती। यदि हम सही हैं तो कानून का विरोध क्यों और उससे डरने या डराने के प्रपंच क्यों?

विदेशी धन बनाम विदेशी प्रभाव:

असल बहस विदेशी धन को रोकने या अनुमति देने की नहीं अपितु, उस धन के माध्यम से हो रहे विदेशी प्रभाव को समझने की है। विदेश से आया पैसा यदि किसी अस्पताल में मरीज का इलाज करता है, किसी गरीब बच्चे की शिक्षा में लगता है, किसी प्राकृतिक आपदा में राहत पहुँचाता है या किसी वैज्ञानिक शोध में उपयोग होता है, तो वह मानव कल्याण का माध्यम हो सकता है। लेकिन यदि वही पैसा देश के भोले भाले लोगों के अवैध धर्मांतरण करने, उसकी सामाजिक संरचना को प्रभावित करने, राजनीतिक वातावरण को निर्देशित करने, हिंसक अथवा विघटनकारी गतिविधियों को बढ़ावा देने या स्वदेशी कानून को तोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है, तो वह अस्वीकार्य है।

देश में विदेशी धन की प्रयोगकर्ता प्रत्येक संस्था को भी-

FCRA

(विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम)

संशोधन विधेयक 2026

देश में विदेशी धन की पारदर्शिता और जवाबदेही को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम



विदेशी धन का पूरा स्रोत बताना चाहिए।



प्राप्त धन और खर्च का सही हिसाब देना चाहिए।



निश्चित बैंकिंग व्यवस्था का पालन करना चाहिए।



विदेशी योगदान को निर्धारित उद्देश्य व क्षेत्र के लोगों में ही खर्च करना चाहिए।



संबंधित दस्तावेज और लेखे समय पर प्रस्तुत करने चाहिए।



विदेशी दान और भारतीय संस्था के बीच किसी भी संदिग्ध वित्तीय या राजनीतिक संबंध की छिपाना नहीं चाहिए। यही तो वास्तविक पारदर्शिता है।



“यह विधेयक देश में विदेशी अंशदान के उपयोग में जवाबदेही, पारदर्शिता और जनविश्वास सुनिश्चित करने की दिशा में एक शक्तिशाली पहल है।”

पारदर्शिता | जवाबदेही | जनविश्वास

भारत का विकास, राष्ट्र का विश्वास

स्मरण रहे कि—

देशी और कुछ विदेशी शक्तियों द्वारा नागरिकता संशोधन अधिनियम के विरोध में जिस प्रकार का भ्रम और दुष्प्रचार फैलाया गया वैसे ही कुछ पापी पादरी, षड्यंत्रकारी चर्च, भड़काऊ भाई जान और कुछ अन्य संस्थाएँ आज कल भारत विरोधी ऐसे झूठे अभियान चला रही हैं जिनसे देश को सावधान रहना होगा। **देश में विदेशी धन आए लेकिन भारतीय कानून के रास्ते से। सेवा हो- लेकिन पारदर्शिता के साथ।** धार्मिक या सामाजिक कार्य भी हों- लेकिन संविधान और कानून के दायरे में रह कर। हमारे राष्ट्रीय हितों से खिलवाड़ करने वाले किसी भी विदेशी धन पर बिना भेदभाव, बिना दबाव और बिना डर के कठोर कार्रवाई होनी ही चाहिए। यही एक सम्प्रभु और आत्मविश्वासी भारत की नीति है। हमें धन का “दान” चाहिए, “दानव” नहीं।



-विनोद बंसल

राष्ट्रीय प्रवक्ता-विहिप



३२९- सन्त नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065

जीवन अमृत



दूसरी चाल— शुशुलूक अर्थात् भेड़िए की वृत्ति मनुष्य जीवन में भेड़िए की वृत्ति वर्जित बताई गई है। भेड़िया



बड़े क्रूर व द्वेषी स्वभाव का होता है। अपने से कमजोर पर हर समय आक्रमण कर उसे क्षति पहुँचाने की भावना उसमें रहती है। बड़ा चालाक प्रवृत्ति का होता है। मानव जीवन **“सर्वे भवन्तु सुखिनः”** के सुविचारों से सुशोभित योनी है। सबको यथायोग्य वर्तने की योनी है, छोटों को आश्रय और बड़ों के प्रति सम्मान भाव देने के गुणों से युक्त है। यदि मनुष्य में क्रूरता, छोटों पर अत्याचार और व्यवहार में छल-कपट, धूर्तता पाई जाए तो ऐसा जीवन, जीवन नहीं। द्वेष भाव रखने वाला मनुष्य हमेशा क्रोधी रहेगा। क्रोध जीवन को नाश करने का प्रमुख लक्षण बताया गया है। अतः मनुष्य के जीवन में भेड़िए के गुणों को न आने दें।

तीसरा अवगुण कुत्ते का— कुत्ता चापलूस और स्वजाति-विद्रोह से भरा होता है। अनेक पशु-पक्षियों को एक साथ झुण्ड के रूप में बड़े समूह के रूप में हम देख सकते हैं, किन्तु कुत्तों को एक साथ प्रेम से रहते कभी नहीं देखा जा सकता। क्योंकि कुत्ता दूसरों को तो सहन कर लेता है, उनके आगे पूँछ हिलाकर खुश करता है, किन्तु अपनी जाति के दूसरे कुत्तों को देखकर वह गुराँता है, झगड़ता है। यह उसका जातीय गुण स्वतः जन्म से प्राप्त है। इसी प्रकार अपने मालिक को प्रसन्न करने के लिए उसके पैरों में लोटना, उसको चाटना- यह चापलूसी कुत्ते में पाई जाती है। मनुष्य जीवन यदि इस प्रकार के गुणों से युक्त है तो उसे मानव कहना ही अनुचित है। मनुष्य तो वही है जो सबको साथ लेकर चले, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझे। हमारे सनातन धर्म के आधार वेद सबको मित्र भाव से देखने का उपदेश करते हैं। मन्त्र में कहा- **“मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे”**। साथ-साथ चलने व संगठित रहने का मार्ग दर्शन भी वेदों में बताते हुए- **“ओं सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्”**- का उपदेश दिया। साथ ही निष्पक्षता व स्वाभिमान को ध्यान में रखते हुए सबसे

यथायोग्य व्यवहार करे। किसी की निगाह में अपना उच्च स्थान बनाने या अपने स्वार्थ में अपने को इतना नीचे न गिराए कि उसकी विनम्रता, चापलूसी में बदल जाए। जो जैसा है, जिस लायक है, उसे वैसा ही मानना और उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना यथायोग्य कहलाता है। यही मनुष्यता की पहचान है। इसलिए मानवता में चापलूसी और स्वजाति-विरोध जैसे दुर्गुण को न आने देना चाहिए। यह मानवता के पथ से गिराने वाले विचार हैं।

चौथा अवगुण— पक्षी, चिड़ा, कोक अर्थात् चिड़ा इन्द्रियों का दास है। वासना में वह लिप्त रहता है। कोक का अर्थ हंस भी है, उसमें भी यही दोष पाया जाता है। यह वृत्ति मनुष्यता के लिए अत्यन्त हानिकारक है। शरीर-बुद्धि दोनों की क्षीणता का मुख्य कारण होता है।

पाँचवाँ अवगुण दर्शाया सुपर्ण का— सुपर्ण का अर्थ सुन्दर पंखों वाला गरुड़ यहाँ बताया गया है। गरुड़ पक्षी को अपने पंखों का बड़ा अभिमान होता है। वह अहंकार वृत्ति का होता है। अहंकारी मनुष्य की आँखें खुली रहती हैं, पर उसे दिखाई नहीं देता। मनुष्य जीवन में अहंकार एक बड़ा दोष है। अहंकारी व्यक्ति अपने को ही श्रेष्ठ और दूसरों को अधम मानता है। समाज में उसका किसी से प्रेमभाव नहीं रहता, विनम्रता से दूर रहता है। अहंकार ही बुद्धि को नष्ट कर गलत पथ पर ले जाता है। इसलिए अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। दुर्योधन, रावण जैसे महाबली भी अहंकार के कारण आज भी समाज द्वारा उपेक्षित हैं। विद्वान् मनुष्य का गुण विनम्रता है। जैसे विनम्र जीभ जन्म से मृत्यु पर्यन्त मुख में रहती है, किन्तु कठोर दाँत जन्म के बाद आते हैं और मृत्यु के पूर्व टूट जाते हैं। इसी प्रकार विनम्रता मनुष्य को सदा उच्च स्थान दिलाने वाला गुण है।

एक प्रसिद्ध श्लोक इस सन्दर्भ में देखें—

नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः।

शुष्ककाष्ठानि मूर्खाश्च, न नमन्ति कदा चन।।

अर्थात्— फलदार वृक्ष और विद्वान् सदा झुक जाते हैं विनम्र होते हैं, किन्तु सूखा पेड़ व मूर्ख कभी नहीं झुकते।

विद्वानों का गुण विनम्रता है बड़ी सुन्दर बात इन पंक्तियों में कही है।

बरसहिं जलद भूमि नियराये।

जथा बुद्धिजन विद्या पाए।।

अर्थात्— बारिश करने वाले जल से भरे बादल नीचे (विनम्र) स्थिति में होते हैं वैसे विद्वान् विद्या प्राप्त करके विनम्र होते हैं

अहंकार मनुष्य को अपनी किसी उपलब्धि या बड़प्पन के कारण अज्ञानता वश उत्पन्न होता है किन्तु जब उसे यह ज्ञात हो जाये के जिस उपलब्धि या गुण के कारण वह अपने को बड़ा मान रहा है, उससे अधिक क्षमता वाला कोई और है, और वह उससे छोटा है तो अहंकार का शमन होता है। परमात्मा की भक्ति, उपासना, प्रार्थना का यही सबसे बड़ा लाभ है। जिसमें भक्त उस सर्वगुण सर्वशक्तिमान संसार के समस्त जड़-चेतन का तथा समस्त धन सम्पदा का स्वामी है। उसके जैसा और कोई नहीं है, इसलिए परमात्मा के सामने मनुष्य नतमस्तक हो जाता है और उस समय उसका घमण्ड उससे बहुत दूर रहता है। इसलिए घमण्ड दूर करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को परमात्मा के शरण में जाना अत्यन्त लाभकारी है। इसलिए विनम्रता का गुण मानवीय व अहंकार पक्षियों का निन्दनीय अवगुण है।

छठा अवगुणी पक्षी गृध्र का— गिद्ध बहुत लालची होता है, लालच ही पथ भ्रष्ट करने का कारण है जो प्राप्त है उससे कहीं अधिक प्राप्त करने की इच्छा ही गलत मार्ग पर मनुष्य को ले जाती है। अनैतिकता, भ्रष्टाचार, झूठ, फरेब, धोखा, अन्याय, अत्याचार, हिंसा, पापवृत्ति ये सब लालच के ही कारण हैं। इसीलिए कहा गया **“लोभः पापस्य कारणम्”** लोभ पाप का कारण है।

लालच ही मनुष्य की हानि और परेशानी का कारण

बन जाता है। जुआ, सट्टा, लॉटरी ये भी इसके कारण हैं। इसीलिए कहा-

माखी गुड में गडी रहे, पंख रहे लिपटाय।

हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय॥

लालची आदमी ही अपना संयम, दिनचर्या सब कुछ खो देता है। उसका एक ही लक्ष्य होता है जो पाना चाहता है उसे कैसे भी प्राप्त करना। फिर वहाँ नैतिकता, सत्याचरण गौण हो जाता है। इसीलिए यजुर्वेद में मानव शिक्षा देते हुए कहा-

तेन त्यक्तेन भुञ्जिथा मा गृधः कस्य स्विद्वनम्॥

- यजुर्वेद ४०/१

उपदेश किया- ऐ मनुष्य तू सोच ये धन किसका है (अर्थात् तेरा नहीं) तू इसे त्याग भाव से भोग, लालच मत कर और इसमें लिप्त मत हो।

संसार की वस्तुएँ भोग के लिए है किन्तु भोग ही सब कुछ नहीं है, उसमें लिप्त होना दुःख का कारण है, त्याग भाव से भोग करना हितकर है।

तुलसी जग में यूँ रहो, ज्यों रसना मुख माँहि।

खाती घी अरु तेल नित, फिर भी चिकनी नाँहि॥

जीवन में किसी भी मनुष्य की समस्त इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो सकती। इच्छायें अनन्त हैं, पूर्ति के साधन सीमित हैं। यदि मनुष्य इन सबकी पूर्ति करने में कई जीवन लगा दे तो भी ये शान्त नहीं हो सकतीं। राजा भर्तृहरि ने लिखा- **“तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा”** हम जीर्ण हो जावेंगे किन्तु ये इच्छायें कभी जीर्ण नहीं होती। लालची व्यक्ति कभी सन्तुष्ट नहीं होता फिर यही असन्तोष ही दुःख का कारण बन जाता है।

एक सुखी जीवन के लिए लालच से दूरी रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि लालचवश ही व्यक्ति पथ-भ्रष्ट होकर पतित हो जाता है। इसलिए लालच की वृत्ति का नाश होना चाहिए। गृद्ध के इस अवगुण को इसलिए मंत्र में अनुचित बताते हुए मनुष्य जीवन के लिये त्याज्य बताया गया है।

सुधी पाठकगण! जीवन अमृत पुष्प के विचारों को

आपने पढ़ा। कृपया इन विचारों पर आप चिन्तन करें। भौतिकवाद का मानवीय जीवन पर बहुत तेजी से प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इस देह सुख को प्राप्त करने में वास्तविक, आन्तरिक सुख को समाज खोते जा रहा है।

आज का मानव कुछ प्राप्त कर बहुत कुछ खो रहा है किन्तु इस पर उसका कोई चिन्तन नहीं है। इसीलिए वह अशान्त है, अतृप्त है, तृष्णा के भँवर में उलझा हुआ है। यही अशान्ति, दुःख के कारण बने हुए हैं। इसीलिए जीवन का सही आनन्द, मुक्ति में अर्थात् दुःखों, चिन्ताओं से दूर रहने में ही है, इसे समझें और उनके लिए वैसा आचरण करें। यही इस पुष्प के विचारों का उद्देश्य है।

विश्व का पहला ज्ञान, सब सत्य विद्याओं का भण्डार और ईश्वरीय ज्ञान संसार में केवल वेद है। एक-एक मन्त्र में जीवन अमृत भरा है। इस पुष्प में उन्हीं वेद मन्त्रों को आधार बनाकर चर्चा की है, जिन पर शंका या अविश्वास का कोई कारण ही नहीं है। इसलिए इन पर विश्वास करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

प्रिय पाठकवृन्द! किसी रोग से मुक्ति पाने के लिये किसी अच्छी औषधि का ज्ञान होना ही स्वास्थ्य सुधारने के लिए पर्याप्त नहीं है उसका सेवन करना भी आवश्यक है। इसी प्रकार मन्त्रों या अच्छे विचारों को याद करना, बार-बार सुनना अच्छा तो है परन्तु यही तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है। उनमें दिए गए सन्देशों को जीवन में उतारना ही सार्थकता और उसके लाभों के लिये आवश्यक है। इसलिए जिन वेद मन्त्रों से जो ज्ञानामृत प्राप्त हुआ है उसे आत्मसात करें तो अवश्य लाभ होगा।

परमात्मा हमें शक्ति दे, भक्ति दे ताकि उसके बताए मार्ग पर हम चलकर जीवन सफल बनावें।



- प्रकाश आर्य

मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत





बोलने से पहले दस बार सोचो

भविष्य में अनिष्ट से जो बचना चाहें उन्हें यह अवश्य पढ़ना चाहिए।

पिछले दिनों में दिल्ली में जन्तर-मन्तर पर कांकरोच पार्टी का प्रदर्शन हुआ था। उसमें जिस प्रकार से युवकों और युवतियों ने भद्दी से भद्दी गालियाँ दीं और ऐसे-ऐसे अश्लील और अपशब्द पट्टियों पर लिख करके प्रदर्शित किए जिससे हम किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। इतने दिन के पश्चात् भी इस सब को लेकर हमारे मन में चिन्ता के बादल घुमड़ते हैं। इस विषय पर पृथक् से लिखा जा सकता है। परन्तु आज हम यह कहना चाहते हैं कि **व्यक्ति चाहे कोई भी हो उसे अपनी वाणी और लेखनी का प्रयोग सोच-समझ कर करना चाहिए** अन्यथा एक दिन ऐसा उसके जीवन में आ सकता है कि वह उस दिन को याद करके बिलख बिलख कर रोने लगे, जब उसने वाणी या लेखनी का अमर्यादित प्रयोग किया था।

वेद माता आपके जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करने को तैयार है पर आप सुनने को तैयार नहीं हैं। ऋग्वेद के दसवें मंडल में एक मंत्र आता है-

**सक्तुमिव तितुना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यान जानते भद्रेषां लक्ष्मीनिर्हिताधि
वाचि ॥** - ऋग्वेद १०/७१/२

मोटे तौर पर यहाँ यह शिक्षा दी गई है कि जिस प्रकार से सत्तू को छान करके, अन्य सब अपरिष्कृत वस्तुओं को अलग करके विद्वान् लोग उसका उपयोग करते हैं, **उसी प्रकार से मनुष्य को भी वाणी का प्रयोग सोच समझकर करना चाहिए, यही बात लेखनी के सन्दर्भ में भी है।**

यहाँ वेद आपके जीवन को दिशा-निर्देश दे रहा है पर आपको ये बातें सड़ी गली महसूस होती हैं। आपको, जो कुछ पाश्चात्य है वह सत्य महसूस होता है। ऐसी मनःस्थिति वालों को परिणाम के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

मुझे नहीं पता कि जन्तर-मन्तर के इन गालीबाजों को कोई सजा होगी या नहीं होगी, परन्तु स्मरण रखें यह सब आज इण्टरनेट पर जो फैला हुआ है वह नष्ट नहीं होता। हम एक इण्टरनेट विशेषज्ञ का वक्तव्य सुन रहे थे उनका कहना है कि इसको चाह करके भी मिटाया नहीं जा सकता। **आपने जो बोल दिया, जो लिख दिया वह समय की रेत पर अंकित हो गया।** अब यह केवल समय की ही बात है कि वह कभी लौटकर के आपके जीवन को प्रभावित करता है अथवा नहीं।

दो उदाहरण आपके सामने रख रहे हैं भली भाँति

पढ़िएगा और सीख लेना चाहें तो जरूर लीजिए।
२०२० में जापान में ओलम्पिक होने वाले थे जो कि कोविड की वजह से २०२१ में हुए। **कीगो ओयामाडा**, जो अपने स्टेज नाम **"Cornelius"** से मशहूर जापानी संगीतकार हैं, Tokyo Olympics के उद्घाटन समारोह (२३ जुलाई २०२१) के लिए संगीत तैयार कर रहे थे। यह उनके जीवन का सबसे बड़ा अवसर था। परन्तु हुआ कुछ और।

१९६४-६५ में दो जापानी संगीत पत्रिकाओं के इन्टरव्यू में ओयामाडा ने स्कूल के दिनों में एक मानसिक रूप से विकलांग सहपाठी के साथ किए गए भयानक उत्पीड़न का वर्णन किया था। उन्होंने इन बातों को शर्मिंदगी से नहीं, बल्कि गर्व और मजे लेने के अन्दाज में बताया था।

ये पुराने इन्टरव्यू ओलम्पिक्स से पहले सोशल मीडिया पर फिर से सामने आए, जिससे भारी नाराजगी फैल गई। ओयामाडा ने पहले X (Twitter) और Facebook पर माफी माँगी।

आयोजकों ने शुरू में कहा कि वे उन्हें काम पर बने रहने देंगे क्योंकि उन्होंने पश्चाताप दिखाया।

इस निर्णय का सोशल मीडिया पर भारी विरोध हुआ, और **आखिरकार ओयामाडा ने खुद १६ जुलाई २०२१ को इस्तीफा दे दिया, समारोह से सिर्फ ४ दिन पहले।**

दूसरा उदाहरण भी टोक्यो ओलम्पिक से सम्बन्धित है।
केंतारो कोबायाशी, Tokyo Olympics के उद्घाटन समारोह के “शो डायरेक्टर” (क्रिएटिव हेड) थे और २०१६ से इस भूमिका में थे। इससे पहले वे **"Rahmens"** नाम की एक लोकप्रिय कॉमेडी जोड़ी के सदस्य रह चुके थे।

१९६८ में उन्होंने एक कॉमेडी शो में अपने साथी कॉमेडियन के साथ एक बच्चों के मशहूर टीवी एन्टरटेनर की नकल करते हुए एक कार्यक्रम किया था। इसमें उन्होंने कागज की इंसानी आकृतियों को

काटते हुए “यहूदियों का नरसंहार” (massacring Jews) करने का मजाक बनाया, जिस पर उस समय तो दर्शक हँसे थे। **पर अब रोने की बारी इनकी थी।**

ओलम्पिक्स से ठीक एक दिन पहले, इस २३ साल पुराने वीडियो का एक क्लिप ऑनलाइन सामने आया, जिसने तुरन्त भारी आक्रोश पैदा किया। परिणाम स्वरूप Simon Wiesenthal Center (एक अन्तर्राष्ट्रीय यहूदी मानवाधिकार संगठन) ने इसे “malicious” (द्वेषपूर्ण) करार दिया और कहा कि **कोबायाशी का ओलम्पिक्स से जुड़ाव ६० लाख यहूदियों की स्मृति का अपमान होगा।**

आयोजन समिति की अध्यक्ष सेइको हाशिमोटो ने २२ जुलाई २०२१ को, यानी उद्घाटन समारोह से महज एक दिन पहले, घोषणा की कि **कोबायाशी को उनके पद से हटा दिया गया है।** उन्होंने कहा कि यह “इतिहास की एक दर्दनाक घटना का मजाक” था।

कोबायाशी ने माफी माँगते हुए कहा कि उनके उस समय के “मूर्खतापूर्ण शब्द-चयन गलत थे” और उन्हें इसका अफसोस है।

तो देखा आपने। इन लोगों ने सोचा भी न होगा कि उनकी बात कभी दोबारा सामने आएगी, और महत्वपूर्ण पलों में उनका जवाब देना पड़ेगा। **दोनों को अपने ही अतीत के शब्दों ने सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण पल पर घेर लिया।**

सावधान- सोशल मीडिया पर बेफिक्री से कही गई गाली, मजाक या अपमानजनक टिप्पणी सिर्फ उस पल की नहीं होती। वह डिजिटल रूप में हमेशा के लिए दर्ज हो जाती है, और भविष्य में किसी भी क्षण-नौकरी के इन्टरव्यू में, करियर के अहम मोड़ पर या सार्वजनिक जीवन में कदम रखते वक्त- वापस आकर नुकसान पहुँचा सकती है। इसलिए बोलने और लिखने से पहले मर्यादा और संयम रखना सिर्फ नैतिकता का सवाल नहीं, बल्कि व्यावहारिक सुरक्षा का भी विषय है।



- अशोक आर्य

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर



चाय और स्वास्थ्य

आजकल चाय एक सर्वसुलभ बहुप्रचलित पेय पदार्थ है। जब भी कोई मेहमान घर पर आता है तो उसका स्वागत चाय के द्वारा ही किया जाता है। बच्चे रात्रि में पढ़ते हैं तो चाय, काम करने पर थकान आती है तो चाय, ऑफिस में कार्य करते हुए थकान निवारण हेतु चाय, घर में खाली बैठे हो तो चाय, कुल मिलाकर वर्तमान समय में हर अवसर पर चाय का सेवन करना सामान्य बात हो गई है। अतः चाय के गुण-धर्म व उससे होने वाले हानि-लाभ की जानकारी होना आवश्यक है।

रासायनिक संगठन- चाय में मुख्य द्रव्य कैफीन है, इसे थीइन भी कहते हैं। इसका प्रमाण चाय में लगभग तीन प्रतिशत होता है। दूसरा द्रव्य टैनिक एसिड १२ से १५ प्रतिशत के लगभग पाया जाता है। तीसरा प्रमुख घटक है उड़नशील तैलीय पदार्थ, यह लगभग आधा से एक प्रतिशत पाया जाता है। इनमें से कैफीन शरीर को उत्तेजित करता है, जिसके कारण चाय पीने के बाद शरीर में स्फूर्ति महसूस होती है। दूसरा द्रव्य है टैनिक एसिड, यह शरीर के लिए बहुत हानिकारक होता है। शीतकाल में तोड़ी हुई चाय की पत्तियों में ग्रीष्मकाल में तोड़ी पत्तियों की अपेक्षा कम टैनिक एसिड होता है, अतः शीतकाल में तोड़ी पत्तियों की चाय उत्तम होती है। यह कुछ महंगी मिलती है। कम मूल्य वाली अर्थात् अधिक टैनिक एसिड वाली चाय, विशेषतः उसके बारीक चूर्ण में अत्यधिक टैनिक एसिड होने से स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होती है। चाय के बड़े पत्तों की अपेक्षा छोटे चूर्ण में टैनिक एसिड

स्वास्थ्य

अधिक व सूक्ष्म चूर्ण में तो अत्यधिक होता है। होटलों में कम खर्च में अच्छा रंग लाने के लिए प्रायः पाउडर वाली चाय का ही उपयोग किया जाता है और बार-बार उबालते रहते हैं, यह सबसे अधिक हानिकारक है।

गुण-धर्म- चाय पत्ती तिक्त, कषाय, विपाक में कटु, उष्णवीर्य, कफहर, वातवर्धक, पाचक, सारक व उत्तेजक है। दूध मिलाकर बनाई गई चाय स्वादु, कफहर, स्वेदल, उत्तेजक, शीतहर, श्रमहर, जड़ता नाशक, ज्वर, शिरःशूल, खांसी, सर्दी, जुकाम में लाभकर है। मूत्रल होने से मूत्रावरोध व जलोदर में भी लाभ करती है।

ध्यान रहे उक्त गुणों की प्राप्ति तभी होती है जब असली चाय की पत्तियों में स्थित कैफीन व टैनिन नामक पदार्थ अत्यधिक मात्रा में सेवन न किए जायें। इसमें जो कैफीन द्रव्य है उसके कारण यह उत्तेजक तथा स्फूर्तिदायक प्रतीत होती है। इसके पीते ही कुछ समय के लिए नाड़ी संस्थान व स्नायुओं में एक चेतनाशक्ति सी दौड़ जाती है और स्फूर्ति महसूस होती है। कैफीन के कारण शरीर की संज्ञावाहक व चेष्टावाहक नाड़ियाँ कुछ समय के लिए अप्राकृतिक रूप से अधिक कार्य करने लगती हैं, इसी को हम स्फूर्ति समझ लेते हैं। किन्तु इस अल्पकालिक स्फूर्ति से हमारी प्राकृतिक उष्मा वा नाड़ियों की कार्यक्षमता का शनैः शनैः ास होता जाता है, वे शिथिल होती जाती हैं। उनमें स्फूर्ति लाने के लिए बार-बार चाय पीनी पड़ती है। परिणाम स्वरूप शरीर की स्वाभाविक शक्ति स्फूर्ति धीरे-धीरे कम हो जाती है। अतः ध्यान रहे कि चाय थोड़ी मात्रा में ही इसके गुण-धर्म में बताये गये लाभों को प्रदान करने वाली होती है, अधिक मात्रा में यह हृदय, मस्तिष्क, व वात नाड़ियों की विकृति उत्पादक होकर अरुचि, वमन, आध्मान,

हस्त-पाद कम्पन, मुख विवर्णता, नाड़ी क्षीणता, स्वप्न दोषादि भयंकर रोगों को पैदा कर देती है।

चाय पत्ती में जो टैनिन एसिड है, वह भूख व पाचन शक्ति को कम करता है, यह शरीर के लिए बहुत हानिप्रद है। पाचन संस्थान पर तो इसका बहुत बुरा प्रभाव होता है। चायपत्तियों में इसकी मात्रा भी अधिक होती है। इसका प्रभाव कम करने का उपाय यह है कि उबलते हुए गर्म पानी को अग्नि से नीचे उतारकर उसमें चायपत्ती डालकर पाँच मिनट के लिए ढककर रख दें। पश्चात् छानकर उसमें इच्छानुसार दूध खांड आदि मिलाकर पीवें। ज्यादा देर तक उबालने से पानी में टेनिन की अधिक मात्रा आ जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है।

चाय का औषधीय प्रयोग

ज्वर- हरी चाय के साथ सौंठ, तुलसी पत्र, अदरक, शक्कर मिलाकर क्वाथ कर पीने से शीतज्वर, पीनस, जड़ता आदि दूर होते हैं, पेट हल्का होता है। स्वेद द्वारा ज्वर का विष शरीर से निकलकर ज्वर शान्त हो जाता है, ताजगी आती है। ग्लानि, आलस्य आदि का नाश होता है।

प्रतिश्याय- हरी चाय, तुलसी, पुदीना, अदरक, बच और गुड़ डालकर बनाई गई चाय से पुराने जुकाम में भी लाभ होता है। उबलते हुए जल में चाय की पत्तियाँ डालकर छिद्र वाला ढक्कन रखकर गर्म कपड़ा लपेटकर सूँघने से ठण्ड और वर्षा में भीगने से होने वाला प्रतिश्याय, कण्ठदाह, कण्ठशूल, सिर में भारीपन, सिरदर्द आदि में लाभ होता है।

अग्निदग्ध- अग्नि, गर्म पानी, गर्म तेल, एसिड आदि किसी भी द्रव्य से जलने पर चायपत्ती डालकर उबाले हुए पानी में कपड़ा भिगोकर रखें, दो-तीन घण्टे तक बार-बार चाय के पानी को बूँद-बूँद कर डालते रहें, जिससे कपड़ा सूखे नहीं। ऐसा करने से त्वचा पर फफोले नहीं होते और त्वचा पूर्ववत् दाग रहित बन जाती है।

नेत्राभिष्यन्द (आँखें आना)- चायपत्ती में 96 गुणा जल डालकर, उबालकर छान लेवें। कुछ बूँदे सुबह-शाम आँखों में डालने से दो-तीन दिन में आँखों में पूरा लाभ हो जाता है।

थकावट- श्रम व थकावट में थोड़ी मात्रा में चाय पीने से लाभ होता है। ज्यादा मात्रा में बार-बार चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

कण्ठक्षत- आमाशय की विकृति या गर्म दाहक पदार्थों के अति सेवन से उत्पन्न गले के क्षत पर चाय के क्वाथ से दिन में दो-तीन बार कुल्ले व गरारे करने से ठीक हो जाता है।

चाय पीने वालों के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

1. भारी शरीर वाले और कफ प्रकृति के पुरुषों को मात्रानुसार चाय पीना लाभकारी है।
2. दुबले-पतले-कमजोर व्यक्ति चाय न पीवें, यदि पीनी ही हो तो ज्यादा दूध डालकर पीवें।
3. सुबह नाश्ते के साथ चाय ले सकते हैं लेकिन दोपहर और सायंकाल के भोजन के बाद चाय पीना हानिकारक है।
4. दिन में एक-दो बार से ज्यादा चाय नहीं पीनी चाहिए।
5. मृदुकोष्ठ वाले मनुष्यों को ज्यादा कड़वी और ज्यादा शक्कर वाली चाय नहीं पीनी चाहिए।
6. शीतकाल और वर्षा ऋतु में उचित मात्रा में चाय पी सकते हैं किन्तु ग्रीष्म व शरद ऋतु में चाय पीना हानिकारक है।
7. अम्लपित्त, दाह, निद्रानाश, उन्माद, हिस्टिरिया, अतिसार, प्रवाहिका, अर्श, शुक्र का पतलापन, स्वप्नदोष, अग्निमांघ, सूखी खांसी, वृक्क प्रदाह आदि विकारों से पीड़ित मनुष्यों और **विशेष रूप से छोटे बच्चों को चाय कभी भी नहीं पीनी चाहिए।**



- वेदमित्र आर्य

सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी



१३- श्रीराम नगर, हिरण्मगरी सेक्टर- ६, उदयपुर (राज.)



कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे

कथा सरित



अयोध्या से चलकर स्वामी जी लखनऊ पहुँचे। इस बार स्वामीजी के लाला ब्रजलाल रईस लखनऊ के साथ धर्म-विषय में प्रश्नोत्तर हुए थे। स्वामी जी के उत्तरों में स्वामी जी की अनेक मान्यताओं के दिग्दर्शन हो जाते हैं अतः इन उत्तरों को यहाँ दे रहे हैं, प्रश्नों का

अनुमान स्वयं हो जाएगा,

१. वर्ण कर्मों के अनुसार ठीक हैं, (वर्तमान) लोक-व्यवहार के अनुसार ठीक नहीं हैं।
२. ब्रह्मविद्या का ज्ञाता ब्राह्मण, युद्ध करनेवाला क्षत्रिय, लेनदेन आदि करनेवाला वैश्य, सेवा करनेवाला शूद्र है। यदि ब्राह्मण वा क्षत्रिय शूद्र का काम करने लगे तो वह ब्राह्मण आदि नहीं, वर्ण कर्म से होता है, कुल से नहीं। जैसे शरीर में मुख श्रेष्ठ है वैसे ही सब वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है, इसलिए ऐसा कहा गया है कि ब्राह्मण मुख से हुआ।
३. यज्ञोपवीत केवल विद्या का चिह्न है।
४. उत्तम कर्म सत्य बोलना, परोपकारादि हैं, **उन्हें ही करना चाहिए।**
५. वाणी से सत्य बोलना अर्थात् जो मन में हो वही जिह्वा से कहना वा ऐसा विचारकर कहना जो कभी झूठा न हो सत्य कहाता है।
६. मूर्तिपूजना बुरा है, कदापि नहीं पूजनी चाहिए, इसी मूर्तिपूजा के कारण संसार में अन्धकार फैल गया है। जैसे सुख-दुःख का ध्यान मन में होता है, वैसे ही **परमेश्वर का ध्यान मन से होना चाहिए, मूर्ति की कोई आवश्यकता नहीं।**
७. सन्ध्या केवल दो समय सायं व प्रातः करनी चाहिए, तीन काल नहीं।
८. बिना समझे बारबार मन्त्र जपना वा लाख दो लाख मन्त्र जपकर पुरश्चरण करना अनावश्यक है, **मनन करना चाहिए।**
९. परमेश्वर का कोई रंग व रूप नहीं है, वह अरूप है जो कुछ इस संसार में दिखाई देता है, वही उसका रूप है।
१०. परमेश्वर एक है और वही सबको बनाने और उत्पन्न करनेवाला है।
११. यदि ईश्वर दिखाई देता तो कदाचित् सब कोई अपनी-अपनी मनोवांछा पूरी करने की प्रार्थना करता और उसे हैरान करता। दूसरे, **जिन तत्त्वों से मनुष्य का यह शरीर बना है उनसे उसको देखना असम्भव है।** तीसरे, जिसने जिसे उत्पन्न किया उसे वह क्योंकि देख सकता है?
- परन्तु परमेश्वर दिखाई भी देता है। ये मनुष्य, पशु-वृक्ष आदि सब पदार्थ जो इस संसार में दिखाई देते हैं, इनका कोई एक बनाने वाला जान पड़ता है, **यही उसका दीखना है** और जैसे सुख-दुःख से आत्मा पहचाना जाता है, वैसे ही परमेश्वर को पहचानो। ब्रह्म सबमें है और हममें भी है और जैसे सुख-दुःख की प्रतीति मन में होती है, वैसे ही उसकी भी हो सकती है। ब्रह्म सब जगह एक-सा है, परन्तु उस चेतन का जितना जिसके आत्मा में प्रकाश है, अर्थात् जितना जिसे ज्ञान है उतना ही उसे ब्रह्म का अनुभव होता है।
१२. **जो मनुष्य विद्वान्, बुद्धिमान् और पण्डित हो उसे 'देव' कहते हैं।**
१३. जब परमेश्वर का आकार नहीं तो उसकी मूर्ति झूठी। यदि किसी का फोटो- ठीक-ठीक प्रतिकृति उतारकर स्मरण करने और देखने के लिए सामने रक्खी जाए तो ठीक है, परन्तु ब्रह्म की मूर्ति और अनुकृति बनाना और नकल करना कुछ का कुछ कर देना है और सर्वथा मिथ्या और अवैध है।

१४. संस्कृत-भाषा सदा से है और अत्यन्त शुद्ध और परिष्कृत है। यदि फारसी और अंग्रेजी में 'ब' बोलना चाहें तो स्पष्टतया प्रकट नहीं हो सकता। फारसी में 'बे' और अंग्रेजी में 'बी' कहेंगे, परन्तु किसी अक्षर को बिना दूसरे अक्षर की मिलावट के प्रकट करने का गुण केवल संस्कृत में ही है।
१५. जैसे माता-पिता अपने पुत्र को सिखाते हैं कि माता-पिता और गुरु की सेवा करो, उनका कहा मानो, ऐसे ही भगवान् ने स्तुति सिखाने के लिए वेद में अपनी स्तुति लिखी है।
१६. भगवान् का मुख तो नहीं है। उसने अग्नि, वायु आदित्य, अंगिरा चार ऋषियों के हृदय में वेद का प्रकाश किया, परन्तु वेद उन ऋषियों के बनाये हुए नहीं हैं, वे भगवान् के बनाये और कहे हुए हैं। वे चारों ऋषि कुछ न पढ़े थे और न कुछ जानते थे, भगवान् ने उनके द्वारा वेद कहे हैं। जैसे कोई मनुष्य सन्निपात में विवश होकर बोलने लगते हैं, वैसे ही भगवान् ने उन चारों के घट में और वाणी में वेदों का प्रकाश किया और उन्होंने इसके बल से विवश होकर कहा, अतः स्पष्ट है कि वेद भगवान् ने ही कहे हैं।
१७. जीव अपनी जाति प्रकृति वा स्वरूप में एक हैं और संख्या में अनेक हैं। जैसे एक मनुष्य जाति है और दूसरी पशुजाति है, इत्यादि। जैसे जल में जो रंग मिला दोगे वैसे ही हो जाएगा, वैसे ही जिस देह में यह जीव जाएगा वैसा ही उसका रंग-रूप और छोटा-बड़ा देह होगा, परन्तु जीव सबका एक-सा है, जैसा चींटी का वैसा ही हाथी का।
- एक दिन स्वामीजी ने यह भी कहा था कि मैंने वेदों के एक-एक मन्त्र पर पूर्ण विचार किया है, उनमें कोई भी युक्ति-विरुद्ध बात नहीं है।
- यहीं लखनऊ में स्वामी जी ने अंग्रेजी पढ़ना आरम्भ किया था इस बात को लेकर के १८ अक्टूबर सन् में १८७६ में 'बिहार बन्धु' नामक पत्र जो कि पटना से निकलताथा उसमें लिखा-
- पण्डित दयानन्द सरस्वती विलायत जाना चाहते हैं इसलिए आजकल लखनऊ में अंग्रेजी पढ़ रहे हैं। इसमें कुछ संदेह नहीं कि उक्त महाशय के विलायत जाने से वहाँ के विद्वानों को बड़ा आनन्द होगा।
- परन्तु अंग्रेजी पढ़ने का यह क्रम स्वामी जी की व्यस्तताओं के कारण आगे चल नहीं पाया।



प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपा निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनिन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

आर्य समाज हिरण मगरी का वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज हिरण मगरी, सेक्टर-४ उदयपुर द्वारा छः दिवसीय वेद प्रचार समारोह २३ अगस्त से २८ अगस्त तक यज्ञ, भजन और प्रवचन के साथ आयोजित किया गया। समाज के उपमंत्री भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि आचार्य योगेश भारद्वाज, कुलपति आर्ष विद्याकुलम्,



बढ़ेड़ी, मुजफ्फरनगर के प्रतिदिन प्रातः एवं सायं ओजस्वी एवं क्रान्तिकारी प्रवचन हुए। प्रातःकालीन सत्रों का आरम्भ इन्द्र प्रकाश वैदिक के पौरोहित्य में यज्ञ से हुआ। प्रभु भक्ति, राष्ट्र भक्ति और महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन प्रसंगों पर भजन पण्डित केशव देव शर्मा; सुमेरपुर एवं पण्डित इन्द्रदेव पीयूष; उदयपुर द्वारा प्रस्तुत किए गए। सभी सत्रों में वानप्रस्थी मुनि नरेन्द्र आर्य, बढ़ेड़ी मुजफ्फरनगर का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सायंकालीन सत्रों में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष अशोक आर्य, न्यास मंत्री भवानी दास आर्य, मंगलायतन यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ के कुलपति प्रो. डॉ. परमेश्वर कुमार दशोरा और जिला साक्षरता अधिकारी, उदयपुर महिपाल राठौड़ की अध्यक्षता रही। स्वागत उद्बोधन आर्य समाज हिरण मगरी के प्रधान संजय शांडिल्य ने और धन्यवाद मंत्री वेद मित्र आर्य ने ज्ञापित किया। मंच संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया और शारदा गुप्ता, उपप्रधान कृष्ण कुमार सोनी, कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल, प्रचार मंत्री सरला आर्या, उपमंत्री सुभाष चन्द्र कोठारी, आर्य समाज हिरण मगरी महिला प्रकोष्ठ संयोजिका चन्द्रकान्ता वैदिका आदि का इस आयोजन की सफलता में विशेष योगदान रहा। बड़ी संख्या में आर्यजनों ने समारोह में भाग लेकर वैदिक संस्कृति के प्रचार हेतु संकल्प लिया।

- भूपेन्द्र शर्मा; उप मंत्री-आर्य समाज, हिरण मगरी सेक्टर-४ उदयपुर

संभल भूमि विवाद: 50 करोड़ की जमीन आर्य समाज मंदिर के नाम दर्ज, 10 अवैध मकानों पर चलेगा बुलडोजर

उत्तर प्रदेश के संभल जिले में शेर खां सराय इलाके की ५० करोड़ रुपए कीमत की करीब पाँच बीघा जमीन को लेकर बड़ा फैसला सामने आया है। एक साल तक चली SDM कोर्ट की सुनवाई के बाद विवादित जमीन को दोबारा 'आर्य समाज मंदिर' और ग्राम समाज के नाम दर्ज कर दिया गया है। अदालत के आदेश के बाद राजस्व रिकॉर्ड अवैध रूप से दर्ज मुस्लिम नामों को हटा दिया गया है, और प्रशासन ने कब्जाधारियों को जमीन खाली करने की चेतावनी दी है।

मामला और सुनवाई

शिकायत मिलने के बाद यह मामला संभल के SDM विकास चंद्र की अदालत में दर्ज हुआ। करीब एक साल तक चली सुनवाई में दोनों पक्षों ने अपने-अपने दस्तावेज और सबूत पेश किए। सुनवाई के दौरान SDM कोर्ट ने तहसीलदार से मौके की रिपोर्ट माँगी।

तहसीलदार की जाँच रिपोर्ट में सामने आया कि खाता संख्या १०३, १०६ और १०७ की कुल ३,३५० स्क्वायर मीटर जमीन आर्य समाज मंदिर की ही है, और इस पर अवैध रूप से पक्के मकान व एक मजार बनाई गई है। इसी रिपोर्ट के आधार पर SDM विकास चंद्र ने फैसला सुनाते हुए जमीन को फिर से आर्य समाज मंदिर और प्रधान ग्राम समाज के नाम दर्ज कर दिया।

निरस्त हुए 11 नाम

अदालत के आदेश के बाद इस जमीन से अकीला बेगम, अहमद हसन, गुलाम वारिस, मोहम्मद अली, मोहम्मद आलम, मोहम्मद हसन, माहिर हुसैन, तकिरुल्लाह, नुरुल्ला, शम्बीरन और सुलतान के नामों को तुरन्त प्रभाव से निरस्त कर दिया गया है।

तहसीलदार का बयान: प्लॉटिंग करके बेची गई थी जमीन

तहसीलदार धीरेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि खाता संख्या १०३, १०६ और १०७ राजस्व रिकॉर्ड में आर्य समाज मंदिर के नाम दर्ज जमीन थी, जिसका प्रबंधन ग्राम समाज के प्रधान को सौंपा गया था। लेकिन पहले ग्राम समाज के प्रधान और कुछ स्थानीय लोगों ने पूरी जमीन पर अवैध कब्जा करके प्लॉटिंग कर दी और इसे बेच दिया। इस जमीन पर एक मजार और १० से ज्यादा मकान बना लिए गए थे।

आदेश मिलते ही तहसील प्रशासन की टीम भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुँची। जमीन की पैमाइश की गई तो ३,३५० स्क्वायर मीटर जमीन पर १० पक्के मकान और एक मजार बनी हुई मिली। प्रशासन ने अवैध कब्जाधारियों को चेतावनी दी है कि वे खुद जमीन खाली कर दें, वरना नियम के मुताबिक बेदखली और बुलडोजर की कार्रवाई की जाएगी।

आर्य समाज मंदिर प्रतिनिधियों ने करीब एक साल पहले संभल जिला प्रशासन से इस बारे में शिकायत दर्ज कराई थी।

ध्यातव्य है कि मुस्लिम पक्ष का दावा है कि यह दरगाह १५० साल पुरानी है।



श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास परिवार की ओर से हम हमारे आदरणीय और समर्पित सदस्य श्री चंद्रकान्त आर्य के असामयिक निधन पर गहरा दुःख और संवेदना व्यक्त करते हैं। वे एक सच्चे आर्य समाजी और न्यास के कार्यों के लिए एक

अनमोल सम्पत्ति थे। उनका निष्काम सेवाभाव और वैदिक मूल्यों के प्रति समर्पण हमारे लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत रहेगा। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस अपार दुःख को सहने की शक्ति दें। हम शोक संतप्त परिवार के साथ इस कठिन समय में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। उनके योगदान को सदैव याद रखा जाएगा।

हलचल

विद्यार्थियों ने वैदिक ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल एवं रोचक ढंग से समझा

आर्य एकेडमी इंटरनेशनल स्कूल, मुजफ्फरनगर में आयोजित वैदिक फिजिक्स सेमिनार विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक रहा। कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की उपस्थिति में वैदिक चिन्तन और आधुनिक भौतिक विज्ञान के सम्बन्धों पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यक्रम में वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम के प्रमुख आचार्य अग्निव्रत जी एवं प्राचार्य जी द्वारा वैदिक ग्रन्थों में वर्णित विभिन्न



वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल एवं रोचक ढंग से समझाया। डार्क मैटर, ऊर्जा, बिग बैंग, समय और चेतना जैसे विषयों पर विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। प्रश्नोत्तर सत्र में विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न रखे। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए वैदिक फिजिक्स से सम्बन्धित अध्ययन सामग्री एवं पुस्तकें उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था की गई तथा विद्यालय द्वारा आगामी शैक्षणिक सत्र से परिचय वैदिक भौतिकी पुस्तक को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की दिशा में प्रयास करने की बात कही गई।

इस सफल एवं सार्थक आयोजन के लिए विद्यालय के डायरेक्टर एवं प्रधानाचार्य महोदया का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार। विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा को केवल इतिहास के रूप में नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से समझने की दिशा में प्रेरित करने के लिए विद्यालय परिवार का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

— अग्निव्रत-आचार्य

— अग्निव्रत-आचार्य

॥ वैवाहिक सूचना ॥

नाम : आचार्य शिवनाथ आर्य 'वैदिक'

जन्म : 18 जुलाई, 1993 ऊँचाई 5 फिट 6 इंच

रक्त समूह- O+

स्थान : नगर- कुरारा, जिला- हमीरपुर (उत्तरप्रदेश)

कुल व गोत्र- कान्यकुब्ज वैश्य, कश्यप। (जातिबन्धन नहीं)

पिता : स्मृतिशेष श्रीमान् लाल जी

माता- श्रीमती प्रेममूर्ति जी

परिवार : 2 बड़ी बहनें, 2 बड़े भाई (सभी विवाहित), 5वें स्वयं

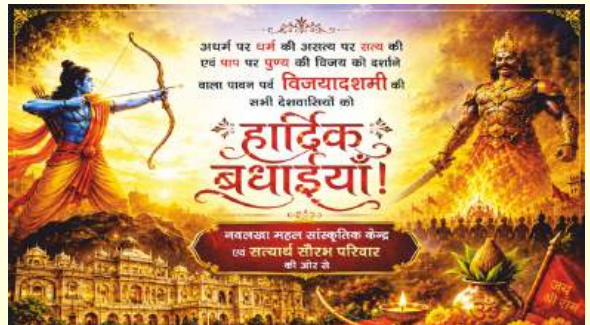
शिक्षा : आधुनिक शिक्षा 12वीं।

गुरुकुल में गत 13 वर्षों में पूज्य मुनि सत्यजित जी एवं श्रद्धेय स्वामी विष्वङ्ग परिव्राजक जी के सान्निध्य में संस्कृत व्याकरण, निरुक्त, छन्दः, कल्प, काव्य एवं वैदिक दर्शन विषयों से स्नातक।



के विवाह हेतु एक वैदिक सिद्धान्तों से सुपरिचित व समर्पित, भारतीय जीवन शैली, स्वभाषा तथा संस्कृति के प्रति गौरवान्वित, पारिवारिक, मिलनसार, सुन्दर एवं सुशील कन्या की आवश्यकता है।

सम्पर्क : 6354100923, 9408347884 | **यूट्यूब :** वैदिक शंखनाद | **फेसबुक:** आचार्य शिवनाथ आर्य वैदिक



—Over 100 shades—

Dollar

Missy
CHIC CASUALS

CAPRI | ANKLE LENGTH | CHURIDAR | KURTI PANT

#GoGirlGo

Chitrangada Singh

Chitrangada Singh

Buy Online: www.dollarshoppe.in/ | [Flipkart](#) | [shopdeal](#) | [Myntra](#) | [SHOPLUXE](#) | [www.dollarglobal.in](#)

Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ये बातें सर्व झूठी हैं, क्योंकि मरा हुआ
मनुष्य कबरस्थान से कभी नहीं निकल
सकता। वे किसी पर न जाते, न संवाद
करते हैं, ये सब बातें अज्ञानी लोगों
की हैं।..... क्या आजकल के सुशिक्षित
ईसाई अंगरेज लोग इन गपोड़ों को भी
मानते होंगे? यदि मानते हैं तो भ्रमजाल में पड़े हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, त्रयोदश समुल्लास पृष्ठ ४९४

كل نفس
ذائقة الموت